ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

अगस्त 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

श्रावणी उपाकर्म, स्वतंत्रता दिवस एवम्
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर आप सभी को
आतमशुद्धि आश्रम परिवार की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

फर्रूखनगर आश्रम मासिक सत्संग की झलकियां

(विवरण पृष्ठ 6)

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1047
श्री ठाकुर दास पाल
आर्य जी मंडल-सिरपुर
कागज नगर, तेलगांना

1048
डॉ. मुमुक्षु आर्य जी
सैक्टर-6, नोएडा, गौतम बुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

1049
श्री रामप्रताप जी आर्य
सुपुत्र श्री फूलचंद जी
नरवाणा, हरियाणा

1050
श्री विश्वजीत जी बत्तरा
आदर्श नगर, दिल्ली

1051
श्री राजसिंह जी राठी
दयानन्द नगर, बहादुरगढ़

1052 आर्य समाज पंजाबी बाग
नई दिल्ली

1053 एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल
सैन्ट्रल मार्किट, पंजाबी बाग पश्चिम, दिल्ली

1054 श्री देवमणी शर्मा
थाना रोड़, नजफगढ़, दिल्ली-41

1055 श्री जांगिड ब्राह्मण शखा सभा पुस्तकालय
C/o विश्व कर्मा धर्मशाला, सुरखपुर रोड़ नजफगढ़, दिल्ली

1056 श्री दयाकिशन जी
सुपुत्र श्री याद राम जी
काठमण्डी, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा

1057 श्रीमती विमला देवी जी
थाना रोड़, नजफगढ़
दिल्ली-110063

1058 श्री दलवीर सिंह जी
कुमार आयरन स्टोर, थाना रोड़, नजफगढ़, दिल्ली-110063

प्रिय बन्धुओं! मास अगस्त में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी सितम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

श्रावण-भाद्रपद सम्वत् 2075 अगस्त 2018

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक—स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-08

(वर्ष 48 अंक 08)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

❖

सम्पादकः

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला—झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
अतिथि के आने पर	7
आर्ष व अनार्ष शिक्षा पद्धति	8
यज्ञ एवं योग मनुष्य जीवन के आवश्यक कर्त्तव्य...	10
कुछ महत्व की बातें	12
पवमान पर्व (486 से 545 तक)	13
कैसे बनाएं रिश्तों को मधुर	14
भारत	15
हमारा आना-ज़ाना	17
आँखों की रक्षा के लिए क्या करें?	19
सफल जीवन की सार्थक ऊर्जा	20
राखी की लाज/हंसो और हंसाओ	21
पाखण्डों की निर्माण शाला-पुराण	22
आर्य समाज एवं स्वतन्त्रता संग्राम	23
अद्वितीय सोच के धनी-नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	27
उत्तम आदर्श पुरुष योगीराज श्रीकृष्ण	29
श्रावणी पर्व-रक्षाबन्धन-मानव सुरक्षा एवं श्रद्धा का पर्व	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने दी भव्य समारोह में भावभीनी विदाई

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति, परोमकारिणी सभा अजमेर के कार्यकारी प्रधान, आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान्, वक्ता और मनुस्मृति के शोधकर्त्ता एवं भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र कुमार के संस्मरणों से जुड़ने का मुझे सहज रूप में अवसर प्राप्त हुआ, इसे मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ।

दाएं से श्री कन्हैया लाल जी आर्य, कार्यवाहक कुलपति प्रो. डी.के. माहेश्वरी जी, श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी एवम् श्री शर्मा जी

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) को स्थापित हुए एक सौ वर्षों से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है और वहां से सैकड़ों विद्वान् स्नातक निकल चुके हैं। डॉ. सुरेन्द्र कुमार पहले स्नातक हैं जिन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार जैसे आर्य समाज के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय का कुलपति होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। यह न केवल गुरुकुल झज्जर के लिए अपितु परोपकारी सभा और सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए गर्व और गौरव की बात है।

यू.जी.सी. द्वारा प्रस्तावित सर्च कमेटी द्वारा डॉ. सुरेन्द्र कुमार का कुलपति के लिए चयन होने पर दिनांक 10 जुलाई 2013 को जब उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया तो मुझे उनके साथ गुरुकुल विश्व-विद्यालय में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पांच वर्ष क सफलता कार्यकाल पूर्ण होने पंर 12 जुलाई 2018 को जब कार्यभर त्याग किया तो भी मुझे उनके साथ होने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों ही अवसरों का मैं प्रत्यक्ष द्रष्टा रहा हूँ।

13 जुलाई 2018 को विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से उनके सम्मान में भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों शिक्षक, कर्मचारी, विद्यार्थी एवं सेवानिवृत जन उपस्थित थे। सभी विभागों और यूनियन की ओर से उनका स्वागत करने के लिए माल्यार्पण किया गया। कार्यवाहक कुलपति प्रो. डी.के. माहेश्वरी और कुलसचिव प्रो. दिनेश भट्ट ने स्मृति चिन्ह एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान किया।

अनेक शिक्षक कर्मचारी और विद्यार्थी इस समारोह में अपनी भावनाएं व्यक्त करना चाहते थे किन्तु समयाभाव के कारण वरिष्ठ संकाय अध्यक्षों को ही अपने विचार प्रकट करने का सुअवसर मिला। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी कि इतने बड़े जनसमूह के बीच मुझे भी विचार प्रकट करने का सुअवसर मिला। कार्यवाहक कुलपति, कुलसचिव और प्रोफेसर वक्ताओं ने डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी की उपलब्धियों के बारे में जो जानकारियाँ दी उन्हें सुनकर हमारा सिर गर्व से ऊँचा हो गया। वक्ताओं ने डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के विषय में इस प्रकार बताया। उन्होंने कहा-

(क) हमें 30-35 वर्ष का समय यहाँ सेवाकार्य करते हुए हो चुका है। यह हम पहला अवसर देख रहे हैं जब किसी कुलपति के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित हो रहा है और वह भी भव्य स्तर पर। नहीं तो सब विवादास्पद रूप में बिना समारोह के विदा हुए हैं।

(ख) सन् 2006 से यह विश्वविद्यालय संकट से गुजर रहा था। चवालीस विश्वविद्यालयों के साथ इसको भी भंग करने का नोटिस केन्द्र सरकार के शिक्षा मन्त्रालय से प्राप्त हो गया था। सन 2009 में टंडन कमेटी ने इस विश्वविद्यालय को 'सी' ग्रेड विश्वविद्यालय की सूची में डाल दिया और इसकी सभी सुविधायें समाप्त कर दी। डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के कार्यकाल में इनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट से विश्वविद्यालय के पक्ष में केस में विजयी रहे और

विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन करने वाली राष्ट्रीय संस्था नाक (NAAK) द्वारा 2015 में इसे 'ए' ग्रेड प्राप्त हुआ है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहला अवसर था जब इसे 'ए' ग्रेड मिला है। उसके पश्चात निरीक्षण के लिए यू.जी.सी. की ओर से एक 14 सदस्यीय कमेटी आई जिसने विश्वविद्यालय के पक्ष में रिपोर्ट दी जिसमें टंडन कमेटी द्वारा प्रदत्त 'सी' ग्रेड को निरस्त कर अनुदान आदि की सुविधायें पुनः प्रारम्भ करने की सिफारिश की है।

(ग) यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने बिना किसी भेदभाव के शिक्षकों और कर्मचारियों के साथ शिष्ट व्यवहार किया तथा विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली को व्यवस्थित और नियमानुसार बनाया। उन्होंने विपरीत परिस्थितियाँ होते हुए भी संस्था के हित में निर्णय लिये, कभी संस्था का अहित नहीं होने दिया।

(घ) जब डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने कार्यभार संभाला पाँच छः वर्षो से शिक्षकों, कर्मचारियों के प्रोन्नति के केस अनिर्णीत पड़े थे, उन सब को बिना किसी पक्षपात के पदोन्नत किया। सेवानिवृत होते समय सभी शिक्षकों/कर्मचारियों की यथासमय पदोन्नति हो चुकी है।

(ड) पाँच छः वर्षो से विश्वविद्यालय का ऑडिट नहीं हुआ था उस ऑडिट प्रक्रिया को नियमित कराया गया। अब प्रतिवर्ष नियमित रूप से ऑडिट होता है।

(च) इसी प्रकार सन् 2006 की पेन्शन फिक्सेशन लम्बित चल रही थी। आज एक भी अधिकारी कर्मचारी की पेन्शन लाम्बित नहीं है। वर्षों से रिक्त पड़े पदों को भरने की प्रक्रिया भी डॉ. साहब ने पारदर्शी तरीके से सम्पन्न की।

(छ) अपवाद अवसरों को छोड़कर डॉ. साहब ने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में अधिकांशतः अपना यात्रा भत्ता नहीं लिया। एक भी हवाई यात्रा, बस यात्रा और रेल यात्रा का व्यय विश्वविद्यालय से ग्रहण नहीं किया। एक बार भी डॉ. साहब निर्धारित पांच हजार दैनिक व्यय के होटल में नहीं रूके। त्यागभाव से उन्होंने कार्य करके पूरी ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत किया। वे ऐसे कुलपति थे जिन्होंने अन्य कर्मचारियों की तरह कार्यालय में अधिकतम समय प्रदान किया है।

मैं उपरोक्त विचारों को वक्ताओं से सुन रहा था और भाव विभोर होकर आनन्द का अनुभव कर रहा था। मुझे लग रहा था कि डॉ. साहब ने यजुर्वेद के 40वें अध्याय के पहले मन्त्र के मन्त्राश **''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः''** को अपने इस पांच वर्ष के कार्यकाल में चरितार्थ किया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी का यह पाँच वर्ष का कार्यकाल विश्वविद्यालय के इतिहास में उल्लेखनीय रहा है और विश्वविद्यालय विगत संकटों से मुक्त होकर उन्नति की ओर अग्रसर हुआ है। यही कारण था कि विश्व-विद्यालय के सभी लोगों ने मिलकर भावभीनी विदाई दी। विश्व विद्यालय की ओर से तथा व्यक्तिगत रूप से शिक्षकों और कर्मचारियों के प्रतिनिधि के रूप में प्रो. देवेन्द्र मलिक, डॉ. अजय मलिक, भी संचित डागर, श्री राजीव त्यागी उन्हें उनके निवास स्थान गुरुग्राम तक विदा करने के लिए साथ आये। इस सफलतम कार्यकाल के लिए डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को हार्दिक बधाई और प्रभु से कामना है कि उनका शेष जीवन आर्य जगत् की सेवा में व्यतीत हो।

- कन्हैयालाल आर्य, वरिष्ठ
उप्रपधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा
पुस्तकाध्यक्ष परोपकारि सभा अजमेर
उप्रपधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आर्य दैनन्दिनी 2019 (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अतः आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता भेजें। यह आप 31 अगस्त 2018 तक भेजने की कृपा करें। ताकि उसे भली प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके।

संजीव आर्य (प्रबन्धक)
आर्य प्रकाशन, 814 कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-10006
मो. 09868244958, E-mailaryaprakashan@gmail.com

बेटी बचाओ अभियान के लिए उपायुक्त ने किया सम्मानित

बेटी बचाओ अभियान व्याख्यानमाला के द्वारा घर-घर जाकर यज्ञ, भजन व प्रवचन के माध्यम से बेटी बचाओ, अभियान चला रही वैदिक सत्संग मण्डल समिति के प्रधान पं. रमेशचन्द्र कौशिक को जिला उपायुक्त सोनल गोयल ने सम्मानित किया। गौरतलब है कि पिछले तीन वर्षों से वैदिक सत्संग मण्डल बेटी बचाओं अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमारी पूनम आर्या व संयोजक कुमारी प्रवेश आर्या की व्याख्यानमाला कार्यक्रम चला रहा है। समिति को सम्मान मिलने पर पूर्व प्राचार्य एचएस यादव, द्वारकादास प्रधान आर्य समाज झज्जर, सुभाष आर्य, बालेश्वर शास्त्री, भगवानसिंह आर्य, प्रकाशवीर आर्य, सूर्यप्रकाश आर्य, सूबेदार भरत सिंह, राव रतिराम, राजेन्द्र कौशिक, डॉ. नन्द किशोर सरदाना, पं. बालमुकंद, प्रताप सिंह आदि ने जिला प्रशासन का आभार व्यक्त किया।

मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आश्रम फर्रूखनगर का मासिक सत्संग माननीय श्री सत्यानन्द जी आर्य प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्नता हुआ। आश्रम के मुख्य सहयोगी पण्डित रमेश आर्य यजमान के आसन्न पर सुशोभित हुये और अपने भजनों के माध्यम से मन्त्र मुग्ध किया। मनमोहन जी जिला प्रभारी युवा भारत विनोद जी जिला योग प्रचारक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित भी किया। आश्रम के ब्र. लाल मणि, सत्यानन्द जी आर्य, ब्र. रितेश ने भी मधुर भजन सुनाये। जयपाल आर्य ने भी गायत्री मन्त्र के अर्थ के विषय में बताया। श्री चॉन्द सिंह आर्य ने अपने प्रेरणादायी उदबोधन में शारीरिक स्वास्थ्य पर बल देते हुए कहा कि हम जितना प्रकृति के नजदीक रहेंगे उतना स्वस्थ रहेंगे। चीनी, मैदा एवं नमक सफेद जहर है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अन्त में दोनों आश्रमों के मुख्यअधिष्ठता स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मैं सबके परिवार व आपके सफलता की कामना परमात्मा से कहता हूं। युवा नेता ने अमनदीप ने भी सत्संग को सम्बोधित किया। मंच का संचालन राजवीर आर्य ने किया।'' श्री सत्यानन्द जी आर्य प्रधान ट्रस्ट के सहयोग से स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई।

विरेन्द्र बने आर्य समाज बाछौद के प्रधान

सोमवार देर शाम आर्य समाज बाछौद की बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता उपप्रधान बिरेन्द्र सिंह आर्य ने की। वेद प्रचार मंडल के संरक्षण महात्मा विश्वमुनि के सानिध्य में आयोजित चुनाव में 21 सदस्यों की कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यकारिणी में महात्मा विश्वमुनि एवं सुरेन्द्र को संरक्षक, बिरेन्द्र सिंह आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान, मनीश कुमार और राजेन्द्र योगी को उपप्रधान, मनोज कुमार मन्त्री, सुरेन्द्र कुमार उपमन्त्री, जगदीश चौहान खजांची, कर्तव्य आर्य प्रचारमन्त्री, सत्य नारायण आर्य पुस्तकाध्यक्ष, मास्टर अनिल व कीर्ति स्वरूप शर्मा को लेखा निरीक्षक, बिशनलाल व मिथुन आर्य को संयोजक, मधु शर्मा को महिलाध्यक्ष, मूर्ति यादव को सहायक, रामनिवास चौहान, ललीत कुमार, विकाश, मंजीत यादव, कृष्ण कुमार व ललित यादव को कार्यकारिणी सदस्य चुना गया है।

- आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - **विक्रम देव आर्य**

अतिथि के आने पर

– डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सुगुरसत् सुहिरण्यः स्वश्वो,
बृहदस्मै वय इन्द्रो दधाति।
यस्त्वायन्तं वसुना प्रातरित्वो
मुक्षीजयेव पदिमुत्सिनाति॥

ऋग 1.125.2

ऋषिः **कक्षीवान् दैर्घतमसः औशिजः।** देवता **स्वनयस्य दानस्तुतिः।** छन्द:**त्रिष्टुप्।**

(**सु-गुः**) उत्तम गौओंवाला, (**सु-हिरण्यः**) उत्तम हिरण्यवाला (**सु-अश्वः**) उत्तम अश्वोंवाला (**असत्**) होता है, (**इन्द्रः**) परमेश्वर (**अस्मै**) इसे (**बृहत्**) बड़ी (**वयः**) आयु (**दधाति**) प्रदान करता है (**यः**) जो (**प्रातरित्वः**) हे प्रातः आनेवाले अतिथि। (**आयन्तं**) आते हुए (**त्वा**) तुझे (**वसुना**) धन से (**उत्-सिनाति**) बाँध लेता है, (**इव**) जैसे (**मुक्षीजया**) रस्सी से (**पदिं**) (गाय आदि) पशु को (**बाँधते**) हैं।

रस्सी से जब कोई गाय को प्रेम-पूर्वक बाँधता है, उसे दुलारता है, दाना-चारा खिलाता है, तब वह बदले में अपना अमृत-मय दूध उसे देती है। इसी प्रकार प्रातः काल सद्गृहस्थ के घर भिक्षार्थ आने वाले हे अतिथि-प्रवर! जब सद्गृहस्थ आपको धन देकर प्रेम-पाश में बाँधता है, तब यद्यपि ऊपर से देखने में उसका धन उसके पास से जा रहा होता है, पर वस्तुतः तो उसके पास धन आता है। गाय को जैसे जितने मूल्य का पदार्थ खिलाया-पिलाया जाता है, उससे कई गुणा अधिक मूल्य का वह प्रतिफल में दे देती है, वैसे ही अतिथि-सत्कार करनेवाले को आतिथ्य में व्यय किये गये धन से कई गुणा अधिक धन प्रतिफल में प्राप्त हो जाता है। वह उत्तम गौओं का स्वामी, उत्तम हिरण्य का स्वामी और उत्तम अश्वों का स्वामी हो जाता है। इन्द्र प्रभु उसे बड़ी आयु प्रदान करता है।

भाईयो! यह 'स्वनय' की दान-स्तुति का मन्त्र है। 'स्वनय' का अर्थ है 'अपने स्व (धन) को दूसरों के पास ले-जानेवाला' अर्थात् धन का दानी। वैदिक संस्कृति के अनुसार दिये हुए दान से दान लेनेवाला अतिथि तो तृप्त होता ही है, उससे भी अधिक तृप्ति आतिथेय को होती है। धन-दान से प्रभात आरम्भ करने का उसके मन में जो सन्तोष होता है, उससे उसकी आयु भी बढ़ती है। इसके अतिरिक्त 'गौ' इन्द्रियों का, 'हिरण्य' ज्योति का और 'अश्व' प्राण का भी नाम है। इसके अतिरिक्त 'गौ' इन्द्रियों का, 'हिरण्य' ज्योति का और 'अश्व' प्राण का भी नाम है। अतः आतिथ्य-कर्ता दानी मनुष्य 'मृगु' अर्थात् उत्तम इन्द्रिय-रूप गौओं का स्वामी 'सुहिरण्य' अर्थात् उत्तम आत्म-ज्योति का स्वामी और 'स्वश्व' अर्थात् उत्कृष्ट प्राण का स्वामी भी हो जाता है।

पर जो कोई भी पात्र-अपात्र प्रातः काल भिक्षा के लिए आ पहुँचे, 'प्रातरित्वा' नहीं होता। 'प्रातरित्वा' वे ही कहलाते हैं, जो किसी महान् लोकहित के कार्य की पूर्ति के लिए भिक्षार्थ सद्गृहस्थ के द्वार पर पहुँचते हैं। हे मानव! तू वेद की इस फलश्रुति से शिक्षा ले और दोनों हाथों से भर-भरकर आतिथ्य कर।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

आर्ष व अनार्ष शिक्षा पद्धति

पिछले अंक में हमने संक्षेप में आर्ष प्रणाली के महत्व पर थोड़ा सा प्रकाश डाला था। इस अंक में हम अनार्ष शिक्षा के विषय में थोड़ा सा प्रकाश डाल रहे है। जब आर्य जाति में आलस्य, प्रमाद व स्वार्थ आ गया तो महात्मा बुद्ध जैसे व्यक्तियों को समाज के अन्दर मान्यता प्राप्त होनी शुरु हो गई। यद्यपि महात्मा बुद्ध एक सज्जन व्यक्ति थे लेकिन उनका संस्कृत व व्याकरण का ज्ञान सामान्य था इसलिए वे वेदों में नरबलि व पशुबलि जैसे प्रक्षिप्त मन्त्रों का न होना तो सिद्ध नहीं कर पाये उल्टा यह कह कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली की मै वेदों को नहीं मानता। विद्या का लोप होना शुरु हो गया महीधर व सायण जैसे तथा कथित वैदिक विद्वानों ने अपनी इच्छा अनुसार वेदों में मन्त्रों व अन्य ग्रंथों में श्लोकों को मिला दिया और अपनी इच्छानुसार इनके अर्थ भी करने शुरु कर दिये। दुर्गुणों व दुर्व्यसनों का साम्राज्य पनपने लगा। त्याग, तपस्या व संयम का लोप होना शुरु हो गया। अपनी इच्छा अनुसार गुरुड़म को बढ़ावा दिया जाने लगा। अवतारवाद के झुठी कहानी किस्सों को घड़ा जाने लगा। मूर्ति पुजा का भानु उदय हो गया और ये कुरीतियां अपने साथ व्यभिचार, चोरी, मद्य, मांस भक्षण इत्यादि बुराईयों को ले आई। आर्यवर्त्त मांडलिक राज्यों में विभाजित हो गया। राजा लोग विद्या छोड़कर व्यसनों में फंस गये। आपस में ही युद्ध करने लगे, इसका लाभ उठाकर यवनों ने इस देश पर राज्य करना शुरु कर दिया। यवनों ने लगभग आठ सौ वर्ष तक राज्य किया और इस मध्य जो लूट-खसोट, धर्म परिवर्तन व हमारे समस्त बहुमूल्य साहित्य को नष्ट कर दिया। हमारे विद्या के श्रेष्ठ केन्द्र तक्षशिला व नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया। बचे-खुचे विद्वानों को मौत के घाट उतार दिया गया। पूर्णतया अविद्या का प्रचार प्रसार होना शुरु हो गया। इसी मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित होकर वाम मार्ग व पुराणों की रचना की गई जो कि यवनों की संस्कृति से मिलती जुलती रचना है।

हमारे ऋषि-महर्षियों व महापुरुषों पर मन माने दोष लगा कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि खाओ-पिओ मोज उड़ाओ। स्त्री शिक्षा के द्वार बन्द कर दिये गये वर्ण व्यवस्था जन्म से मानी जाने लगी। इन पुराणों के बनाने वालों ने जितना बेड़ा गर्क किया इतनी हानि तो यवन भी नहीं पहुंचा सके। इसके पश्चात् भारत वर्ष में ईस्ट इंडिया कम्पनी व्यापार के निमित भारत वर्ष में आई। जब अंग्रेजों ने यहां कि सारी स्थिति को सुक्ष्मता से परखा तो उन्होंने 'फूट डालो और राज करो' की कूटनीति के साथ-साथ बड़ी चालाकी से हमारी शिक्षा पर प्रहार किया और इसका दायित्व दिया गया लार्ड थामस बैबिंगटन मैकाले को। यह श्रीमान बड़ा चतुर और कट्टर ईसाई था। इसने हमारी सम्पूर्ण शिक्षापद्धति को ही बदल डाला। इसका उद्देश्य और लक्ष्य था कि अगर मस्तिष्क को बदल दिया जाये तो आचरण स्वत: परिवर्तित हो जायेगा। वह अपनी पुस्तक कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया भाग-6 पृष्ठ 3 पर लिखता है कि ''भारत में एक ऐसा समुदाय बनाने का प्रयास करना चाहिए, जो रक्त और रंग से तो भारतीय हो, परन्तु रूचियों, मान्यताओं, आचरण और चिन्तन में अंग्रेजियत से युक्त हो।'' दूसरा व्यक्ति जिसने अंग्रेजों के शासन में हमारी विद्या रूपी धरोहर को क्षति पहुँचाई वह है मिस्टर मैक्समूलर। इसने हमारी वेद विद्या पर आक्रमण किया। विस्तार भय से ज्यादा तो नहीं लिख रहे परन्तु एक बानगी दिखा रहे हैं जिससे अंग्रेजों की चालाकी को पता चलता है। वह अपने पुत्र को एक पत्र के माध्यम से अपनी भावना को व्यक्त करता है ''संसार की पुस्तकों में बाइबल सर्वोत्कृष्ट है। इसके बाद क्रमश: कुरान, बौद्ध त्रिपिटक और वेद तथा अवेस्ता है।'' यह व्यक्ति वेद का अनुवाद करके भी अपनी पत्नी को पत्र लिखता है कि मेरा यह अनुवाद कालान्तर में भारत के साम्राज्य को दूर तक प्रभावित करेगा। यह भारतीयों के धर्म का मूल है। अब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि भले ही

अंग्रेजों को गये हुये सत्तर साल से भी ज्यादा का समय हो गया है लेकिन अंग्रेजियत का भूत हमारे मस्तिष्क पर अभी भी सवारी कर रहा है। मैकाले और मैक्समूलर सत्य सिद्ध हो रहे हैं। आज अंग्रेजी बोलना, लिखना, पढ़ना और इसी सभ्यता के अनुकूल सारे व्यवहार करना एक स्टेटस सिम्बल बन गया है। कहते हैं संस्कृत, हिन्दी पढ़ने से रोजगार तो नहीं मिलेगा। इस विज्ञान का विकास तो संस्कृत से सम्भव नहीं। यद्यपि मैं किसी भाषा के पढ़ने के विरूद्ध नहीं फिर भी इसका उत्तर दे रहा हूँ कि क्या चीन, जापान और जर्मनी जैसे देशों में वैज्ञानिक विकास नहीं हो रहा है क्या? यह ठीक है कि आपको डॉ. इंजीनियर, वैज्ञानिक व अन्य पदों पर इस शिक्षा के माध्यम से अच्छे वेतन की सर्विस मिल जायेगी। पद, प्रतिष्ठा व अन्य विलासिता का सामान उपलब्ध हो जायेगा लेकिन हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। बहुत पढ़े लिखे लड़के लड़कियाँ आत्म हत्याये कर रहे हैं, अंधविश्वास और अज्ञान की और बढ़ रहे हैं। आश्चर्य कि बात है कि अनपढ़ तांत्रिक पढ़े लिखों को बहका करके सामुहिक आत्म हत्याएं करा रहे हैं। यही शिक्षा प्राप्त नवयुवक व नवयुवतियां क्यों चरित्र हीन हो रहे हैं? आज माता-पिता की सेवा एक स्वप्न मात्र ही रह गया है। बहुत दु:ख होता है जब अखबारों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि शराब पीकर एक 24 वर्षीय नवयुवक ने अपने माता-पिता की इसलिए हत्या कर दी कि उन्होंने उसे शराब पीने से रोका थ। हमारा नवयुवक समाज गलत दिशा में मुड़ गया है। इसका एक ही उपाय है और वह है कि हम फिर से अपने देश में आर्ष प्रणाली की शिक्षा का प्रचलन करें। ऋषि दयानन्द उदयपुराधीश महाराज सज्जन सिंह को सितम्बर 1883 को एक पत्र लिखते हैं कि ''सत् सनातन वेद शास्त्र, आर्यराज-राजपुरुषों की नीति पर निश्चित रहकर उन्नति तन-मन-धन से सदा किया करें। इनसे विरूद्ध भाषाओं की प्रवृति व उन्नति न करें ना करवाये।'' सम्पादकीय लिखते-लिखते अखबार में खबर पढ़ी की चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के एक वरिष्ठ विज्ञान के प्रो. ने काम के दबाव में आत्म हत्या कर ली। यह सब क्या है? गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी तो काम का दबाव क्या होता है समझते ही नहीं। उनकी दिनचर्या, पठन-पाठन के विषय में आप सब आर्य जन जानते ही हैं।

- राजवीर आर्य

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

यज्ञ एवं योग मनुष्य जीवन के आवश्यक कर्त्तव्य होने सहित मोक्ष तक ले जाने में सहायक हैं

- मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द जी ने वेदानुयायी आर्यों के पांच नित्यकर्म बताते हुए उसमें प्रथम व द्वितीय स्थान पर सन्ध्या एवं देवयज्ञ अग्निहोत्र को स्थान दिया है। प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति में द्विजों को पंचमहायज्ञों करने की अनिवार्यता का उल्लेख मिलता है। देवयज्ञ अग्निहोत्र अनेक यज्ञों में से एक है जो प्रतिदिन किया जाने वाला कर्तव्य है। यज्ञ को अग्निहोत्र व हवन आदि नामों से जाना जाता है और इसकी विशेषता यह है कि यह अल्प समय साध्य है तथा इसे नित्य करने से इससे गृहस्थ एवं आसपास के लोगों को स्वास्थ्य आदि का लाभ होता है। यज्ञ से वायु एवं वृष्टि जल भी शुद्ध व पवित्र होता है। अग्निहोत्र में योग के आवश्यक अंग ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना को भी स्थान दिया गया है। यद्यपि ऋषि दयानन्द जी ने दैनिक यज्ञ की जो विधि पंचमहायज्ञ विधि और संस्कारविधि पुस्तकों में दी हैं, वहां स्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मंत्रों को स्थान नहीं दिया है तथापि आजकल जहां जो भी आर्य परिवार वा वैदिक धर्मी यज्ञ करता है, वह इन आठ मंत्रों का अवश्य ही उच्चारण व गान करते हैं। अधिकांश को इन मंत्रों के अर्थ भी ज्ञात होते हैं। ऋषि ने इन मंत्रों के हिन्दी अर्थ बोलने व सुनाने का निर्देश भी किया है। इन यज्ञों से ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना होने के साथ यज्ञ में जिन मंत्रों से आचमन, अग्न्याधान, समिधादान, पंचघृताहुति, जल सिंचन आदि क्रियायें एवं अन्य आहुतियों सहित दैनिक यज्ञ के मंत्रों से आहुतियां दी जाती हैं उनसे भी ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सम्पन्न होती है। इससे योग की अनिवार्य शर्त ईश्वर की निकटता व उसकी प्राप्ति में सहायता मिलती है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वर भक्ति अर्थात् ईश्वर की उपासना का फल बताते हुए कहा है कि इससे मनुष्य के गुण-कर्म-स्वभाव सुधरते हैं, ईश्वर की निकटता प्राप्त होती है और मनुष्य की आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि पहाड़ के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि शारीरिक दु:ख व क्लेशों में जितना कष्ट नास्तिक व सही रीति से ईश्वरोपासना न करने वालों को अनुभव होता है, ईश्वर की उपासना करने वालों को उससे कम प्रतीत होना अनुभव होता है। इससे प्रतीत होता है कि ईश्वर की भक्ति करने से मनुष्य की दु:खों को सहन करने की शक्ति में वृद्धि होती है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सत्य स्वरूप को जानना और ईश्वर की भक्ति व उपासना कर उसे प्राप्त करना है। ईश्वर ने जीवात्माओं के सुख भोग व विवेक प्राप्ति के लिए ही यह समस्त संसार बनाया है। इस समस्त संसार को बनाकर ईश्वर ने जीवों के लिए पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल व अन्नादि अनेक उत्तमोत्तम पदार्थ बनाये हैं। परमात्मा ने जीवों के कर्म के अनुसार उन्हें मनुष्यादि शरीर सहित माता-पिता-भगिनी-बन्धु आदि अनेक संबंधी, परिवारजन व इष्ट-मित्र भी दिये हैं। परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिए सृष्टि की आदि में मनुष्यों को वेदों का ज्ञान भी दिया है जिससे इस सृष्टि के रहस्यों को जानने व समझने की योग्यता उत्पन्न होती है और साथ ही मनुष्य ईश्वर, जीव व प्रकृति को यथार्थ रूप में जान सकते हैं। इस कारण प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का ऋणी हैं। इस ऋण से उऋण होना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। इसी के लिए वेद व ऋषियों ने सन्ध्या अर्थात् सम्यक ध्यान=योग का विधान किया है। इसमें ईश्वर का उसके द्वारा किये गये उपकारों के लिए धन्यवाद करना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य होता है। समस्त सन्ध्या योगानुष्ठान ही है। सन्ध्या में आचमन मंत्र में ईश्वर में सन्ध्या का उद्देश्य मनोवांछित आनन्द अर्थात् ऐहिक सुख-समृद्धि और पूर्णानन्द अर्थात् मोक्षानन्द की प्राप्ति को बताया गया है। सन्ध्या की समाप्ति पर नमस्कार मंत्र से पूर्व समर्पण मन्त्र में भी ईश्वर से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति की कामना व प्रार्थना है। हम जानते हैं कि

हम ईश्वर से जो भी प्रार्थना करें, उसकी पूर्ति के लिए हमें उसके अनुकूल कर्म व प्रयत्न भी करने होते हैं। ऐसा करने पर ईश्वर हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करता है। अतः सन्ध्या करने से ईश्वर की निकटता व मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव में सुधार होने के साथ ईश्वर का सहाय प्राप्त होता है। सन्ध्या व योग का एक मुख्य अंग स्वाध्याय है। स्वाध्याय वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन, उसके चिन्तन व मनन सहित उसके अनुरूप आचरण को कहते हैं। स्वाध्याय से ईश्वर सहित अन्य विषयों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। स्वाध्याय भी एक प्रकार का योग व ईश्वर की उपासना ही है। ईश्वर का सत्य स्वरूप स्वाध्याय व वैदिक विद्वानों के उपदेश आदि से ही जाना जाता है। अतः स्वाध्याय भी हमें ईश्वर के निकट ले जाने व ईश्वर को जानने में सहायक होने से योग ही है। सन्ध्या को जान लेने व उसका नित्य प्रति सेवन करने के बाद ईश्वर के गुणों का निरन्तर ध्यान व धन्यवाद करना तथा स्वाध्याय किये गये विषयों के अनुरूप आचरण करना भी अनिवार्य रहता है। उसे करके हम निश्चय ही योग को सिद्ध कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द समाधि को सिद्ध किये हुए योगी थे। उन्होंने उसकी योग को सन्ध्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इससे यह भी अनुमान होता है कि समाधि सिद्ध योगी होकर भी ऋषि दयानन्द इसी विधि से सन्ध्या वा ईश्वर का ध्यान आदि करते थे। यदि इससे अधिक व अन्य कुछ करते तो उसे भी वह पुस्तक रूप में अवश्य लिखते। अतः सन्ध्या ही वास्तविक योग है। सन्ध्या करके हम निश्चय ही योग करते हैं व निरन्तर अभ्यास कर व उसे बढ़ाते हुए समाधि प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार भी कर सकते हैं। हमारे जो सन्यासी और विद्वान हैं, वह सभी सन्ध्या के माध्यम से ही योग अर्थात् ईश्वर प्राप्ति के साधन व प्रयत्न करते हैं। सन्ध्या में भी यम, नियमों सहित योगासनों का अभ्यास, प्राणायाम आदि करना आवश्यक है।

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ में अग्निहोत्र सहित हमें परोपकार के सभी प्रकार के कर्म करने के साथ जीवन को सत्य व सादगी के अनुसार व्यतीत करना आवश्यक है। वेद ने सभी मनुष्यों के लिए भोगों का भोग त्याग पूर्वक करने की आज्ञा की है। दूसरों का दुःख दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना भी योगी के लिए आवश्यक है। योगेश्वर कृष्ण और ऋषि दयानन्द के जीवन में हमें यह दोनों महापुरुष समाज व देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए दिखाई देते हैं। हमारे सभी प्राचीन ऋषि योगी थे और वह वनों में रहकर यज्ञादि कर्म निरन्तर करते रहते थे। योगी के लिए यज्ञ व अग्निहोत्र का विधान तो श्रुति ग्रन्थों में है, यज्ञ के त्याग का विधान वैदिक शास्त्र में कहीं नहीं है। हमारा यह भी अनुमान है कि यज्ञ करते हुए मनुष्य यदि योगाभ्यास करता है तो वह इससे शीघ्र सफल मनोरथ हो सकता है। आर्यसमाज व वैदिक धर्म से इतर योगाभ्यासी भी योगाभ्यास करते हैं परन्तु बिना वेदों के स्वाध्याय और सन्ध्या-यज्ञानुष्ठान भलीप्रकार न करने से उन्हें योग में ईश्वर साक्षात्कार की सिद्धि यज्ञ करने वाले साधको की तुलना में किंचित विलम्ब से मिलती है, ऐसा अनुमान होता है। यज्ञ करने से मनुष्य के पास शुभ कर्मों की एक बड़ी पूंजी संग्रहीत हो जाती है। यज्ञ से जितने अधिक प्राणियों को शुद्ध प्राणवायु व वर्षाजल की शुद्धि से ओषिधियों की शुद्धि व उनके प्रभाव में वृद्धि होती है, उससे उस यज्ञानुष्ठान करने वाले योगी व उपासक की कर्म-पूंजी इतर सभी योगाभ्यासियों से अधिक होने के कारण उसे शीघ्र योग के लाभों की प्राप्ति का होना निश्चित होता है। यज्ञ व अग्निहोत्र ईश्वर आज्ञा भी है। अतः जो यज्ञ नहीं करते वह ईश्वर की अवज्ञा करते हैं। यज्ञ योग, उपासना व ईश्वर की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक एवं उपयोगी है। सभी योगाभ्यासियों को यज्ञ पर विशेष ध्यान देना चाहिये और दैनिक यज्ञ तो अवश्य ही करने चाहिये, ऐसा हम अनुभव करते हैं।

यज्ञ वह अनुष्ठान एवम् प्रक्रिया है जिससे हम अपना व सहस्त्रों लोगों को शुद्ध प्राण वायु व वर्षा जल सहित आरोग्य फैलाकर उन्हें लाभ पहुंचाते हैं। योगाभ्यास करके हम अपनी आत्मा को ही ईश्वर से मिलाने का प्रयत्न करते हैं। योग व यज्ञ दोनों के लक्ष्य में इस दृष्टि से समानता है कि दोनों में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना होती है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि यदि यज्ञ व योग दोनों का सहारा आध्यात्मिक व्यक्ति लेता है तो वह अपने लक्ष्य

को शीघ्र प्राप्त कर सकता है। यदि व्यक्ति योगाभ्यास ही करे और यज्ञ की उपेक्षा करे तो उसे अपने लक्ष्य प्राप्ति में अधिक समय लग सकता है। गृहस्थ जीवन में यज्ञ करना एकाकी जीवन जीने वाले मनुष्य की तुलना में कुछ सरल लगता है। यज्ञ में अनेक परिवारजनों की सहायता प्राप्त होने से यज्ञ आसानी से होता है जबकि एकाकी जीवन जीनें वाले मनुष्य को यज्ञ करने में कुछ अधिक पुरुषार्थ करना पड़ता है। यज्ञ के साधन एकत्रित करने में भी उसे गृहस्थ व्यक्ति से अधिक पुरुषार्थ करना पड़ सकता है। महर्षि दयानन्द ने योग को सन्ध्या में ही सम्मिलित कर लिया है, ऐसा हम अनुभव करते हैं। महर्षि दयानन्द स्वयं एक उच्च कोटि के योगी थे। वह कई कई घण्टों की समाधियां लगाते थे। रात्रि जब सब सो जाते थे तब भी वह समाधि अवस्था में रहते थे। इससे अनुमान है कि उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार किया था। अत: उनका लिखा व कहा एक-एक शब्द योग व यज्ञ विषय में प्रमाण है। इस आधार पर उनसे प्राप्त सन्ध्योपासना व यज्ञ की विधियां उनकी मनुष्यजाति को अनुपम देन हैं। यह सन्ध्या विधि व उनके वेदभाष्य का स्वाध्याय मनुष्य को योग में प्रवृत्त कर उसे समाधि तक ले जाते हैं। सन्ध्या में प्रार्थना करते हुए उपासक कहता है कि मुझे मोक्ष व अन्य धर्म, अर्थ व काम की प्राप्ति सद्य: अर्थात् आज ही हो। यह बात विशेष महत्व रखती है। यही योग का लक्ष्य भी है। यज्ञ में स्विष्टकृदाहुति में भी सभी कामनाओं को पूर्ण करने की प्रार्थना की गई है। यह महत्वपूर्ण है कि महर्षि दयानन्द ने योग को सर्वसामान्य के लिए सरल बनाया है। योगदर्शन का अध्ययन सन्ध्या करने वाले उपासक को लाभ पहुंचाता है। इससे योगाभ्यासी को साधना के अनेक पक्षों व उपायों का महत्व ज्ञात होता है। सन्ध्या को निरन्तर करने से मनुष्य समाधि की ओर अग्रसर होता है। ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी यही है। अत: यज्ञ एवं योग ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं। दोनों परस्पर पूरक हैं और जीवन के अत्यावश्यक हैं। इन्हें करने से ही मनुष्य जीवन सार्थक व सफल होता है।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोन: 09412985121

कुछ महत्व की बातें

-प्रस्तुति कर्ण आर्य

- श्रवण कुमार से पितृ सेवा सीखी नहीं, मरने पर श्राद्ध करना सीख लिया।
- जीते जी मात पिता से दंगम दंगा, मरे बाद गंगा जी में स्नान कराना पुण्य सीख लिया।
- गंगा जी में हाड डालकर धर्म कमाना सीख लिया।
- बूढ़े को तो बासी टिकड़, मरे बाद मिठाई खिलाकर पुण्य कमाना सीख लिया।
- प्यासे को ना जल पिलाया, शिवलिंग पर जल और दूध चढ़ाना सीख लिया।
- घर को स्वर्ग बनाया नहीं, औरत को लेकर नरड़ पीर पर जाना सीख लिया।
- अन्धे को ना राह दिखाई, रात को जग्राता जगाना सीख लिया।
- घर बच्चों को सूखी रोटी, शनि देव पर तेल चढ़ाना सीख लिया।
- स्वयं का दीपक बुझा रहा, कबरों पर दीप जलाना सीख लिया।
- माता-पिता से ना करे नमस्ते, गैरों को पिता बनाना सीख लिया।
- स्वयं के जीवन काले हैं, पर ऋषियों पर दोष लगाना सीख लिया।
- श्री कृष्ण की एक रूकमणी रानी को जाना नहीं, सोलाह हजार एक सौ आठ रानियों तथा एक-एक रानी के दस-दस पुत्रों का गपोड़ पुराण सीख लिया।
- श्री कृष्ण जी कर्मयोगी, गोपालक एवं वेदों के विद्वान थे, जिन्होंने बद्रीनाथ में बारह वर्ष तक रूकमणी के साथ ब्रह्मचर्य का पालन किया, श्री कृष्ण योगी को जाता नहीं, श्री कृष्ण को माखन चोर, चूड़ी बेचने वाला, कपड़ा, बेचने वाला व्यापारी जान लिया।

पवमान पर्व (486 से 545 तक)

- ज्ञानचन्द शास्त्री, भिवानी

परमात्मा उत्कृष्ट (उच्च) सुखों का धाम है, उग्र शर्म (1) विश्वा दधान ओजसा (3) सभी दिव्यताओं को अपने ओज, पराक्रम से धारण करने वाला है।

उस सोम रूप प्रभु का (मद) रस, मस्ती वरणीय है, जो कि दुष्टता की हिंसक तथा दिव्यता की रक्षक है। (460)

तिस्रों वाच उदरत गावो मिनन्ति धेनवः।
हरिरेति कनिक्रदत्। (47)

दुःखहर्ता, सुखाहर्ता होने से सोम प्रभु हरि है। इस मन्त्र को वैदिक विद्वान, सामवेद भाष्यकार स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने अपने आध्यात्मिक भाष्य में भावार्थ रूप में स्पष्ट करते हुए लिखा कि उपासक के द्वारा अ३म् 'ओ३म्' तीन मात्रा समूह या तीनों मात्रायें उच्चरित हुई दुधारी गौओं के रूप में शब्द करती है तो कल्याणकर शान्त परमात्मा मधुर ध्वनि करता हुआ उपासक के अन्दर प्राप्त होता है।

सर्वधा असि (475) सुख-शान्ति विधायक नायक सोम! आप सबको धारण करने वाले, सर्वधारक हो।

आप हमारे समस्त द्वेष भावनाओं को नष्ट करो, हमसे दूर करो, पृथक करो। विश्वा आप द्विषो जहि। (478)

वह्निमद्या वृणीमहे। (498)

इस जीवन में, आज अभी उस वह्नि (उपासकों को वहन करने वाले तथा ये मोक्ष में ले जाने वाले) रूप परमात्मा को स्वीकार करते हैं, उसका वरण करते हैं।)

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः।
तरत्स मन्दी धावति। 500

प्रभु की मस्ती में दीवाना, मस्ताना भक्त पापों, संकटों को तैरता हुआ दौड़ता हुआ, ऊर्ध्वगति की प्राप्ति करता है। मार्ग में आने वाले विघ्नों का सफाया करता है।

गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः
सोमं यन्ति मतयो वावशानाः। (525)

'गो' नाम वेदवाणी का भी है, ये वेदवाणियाँ, गोपति अर्थात् इन्द्रियों के स्वामी जितेन्द्रिय 'पुरुष को (गो' शब्द इन्द्रियों का भी वाचक है। पूंछती हुई प्राप्त होती हैं अर्थात् मन्त्रों को जानने, उसके गूढ़भावों को समझने के लिए इन्द्रिय संयम दमादि का होना आवश्यक है।

इसी के साथ प्रभु प्राप्ति की प्रबल इच्छा वाला, मननशील उपासक ही सोम परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है, दूसरा अन्य कोई नहीं। प्रभु उपासना का फल, उपासक को सहस्र लक्ष एवं कोटि गुण फल दायक अर्थात् अपरिमित गुणफल दायक होता है। सहस्रदाः शतदा भूरिदावा। (531)

देवान् गच्छन्तु वो मदाः। 547

हे साम! आपके मद (हर्ष प्रवाह) दिव्य गुणों की प्राप्ति कराने वाले हैं।

सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्। 557 प्रभु का मित्र, उस प्यारे मित्र की वाणी को, उसके साथ की गई प्रतिज्ञा को तोड़ता नहीं है। अन्तः प्रेरणा को अनसुनी नहीं करता।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते
प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्तनन्नूर्न तदामो अश्नुते
श्रृतास इद्वहन्तः सं तदाशत।।565

पं. विद्यानिधि शास्त्री कृत उपरोक्त मन्त्र का पद्यानुवाद इस प्रकार से है-

वेदों के स्वामिन्! हे भगवन्! तुम हो प्रभुः! पूर्ण पवित्र हो। हो व्याप्त हमारे गात्रों में देते हो विस्तृत सौख्य धने। अज्ञानी तप से हीन मनुज तुम को न कभी है पा सकता। परिपक्व तपस्वी ज्ञानी ही है पास तुम्हारे आ सकता। इन्द्रामेन्दो परिस्रव।(567)

ऋग्वेद के 113 वां सूक्त भी पवमान सोम कहलाता है। इस सूक्त के सभी ग्यारह मन्त्रों के अन्त में यही पद दोहराये गये हैं। जिसका भाव है कि हे प्रिय सोम! इन्द्र देव के हेतु भरो।

शिशु न यज्ञै. परिभूषत श्रिये। (568) बच्चे की तरह, अपने कल्याण के लिए, जीवन को श्रेष्ठ कर्मों से सुशोभित करो, अलंकृत करो, सजाओ।

वर्मीव घृष्णवा रूज। (548)

हे घृष्णो! घर्षणशील, रिपुघर्षक! आप उग्र कवचधारी की भांति दुष्ट मनोवृति को नष्ट कर दें। ब्रह्म वर्म ममान्तरम्, आप ही एक मात्र मेरे अन्तः कवच हो।

इस पवमान सोम पर्व की ललित व्याख्या पं. श्री चमूपति जी द्वारा लिखित 'सोम सरोवर' नाम से भी उपलब्ध है जो कि पठनीय है।

कैसे बनाएं रिश्तों को मधुर

रिश्तों के संसार में हमें वही मिलता है, जो हम देते हैं, लेकिन जो हम नहीं देते, वह हमें नहीं मिल पाता, भले ही हम उसके लिए तरसते रहें। रिश्ते दर्पण की तरह हमारी भावनाओं को परावर्तित कर देते हैं। हम जिस तरह की भावनाओं से भरे होते हैं, परावर्तित होकर वे ही हम पर अपनी बौछार करती हैं। इसलिए जब हम खुश होते हैं तो खुशी का गुबार चारों ओर फैल जाता है, अनायास ही चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ जाती है, जब हम परेशान होते हैं तो परेशानी की लहरें सभी को परेशान कर देती हैं और इसी तरह जब हम क्रोधित होते हैं, तो क्रोध की रक्तिम-तीखी किरणें इसके वेग को और बढ़ा-देती हैं। इस तरह रिश्तों की इस दुनिया में हमारी भावनाएँ हमें कई गुना होकर वापस मिलती हैं। ऐसा बहुत कम ही होता है कि जिन भावनाओं को हम दूसरों पर प्रक्षेपित कर रहे हों, उसके विपरीत भाव हमें मिल रहे हों। रिश्ते हमें खुशी देते हैं, इस खुशी को बढ़ाने के लिए ही हम अपने रिश्तों की दुनिया का विस्तार करते हैं। यदि रिश्ते बोझ होते, दुःख देते, जीवन में कटुता घोलते तो भला कोई क्यों इन रिश्तों में उलझता? भले ही वास्तविक जीवन में लोग रिश्तों की मधुरता को कम महसूस करते हैं, लेकिन रिश्तों का एहसास, इनकी मधुरता व्यक्ति को आनंदित करती है, पुलकन से भरती है। पर शायद हमारा इन रिश्तों के मनोविज्ञान से परिचय कम है, इसलिए लोग इन रिश्तों को भली प्रकार सहेज नहीं पाते, रिश्तों को लंबे समय तक सहजता से निभा नहीं पाते और बने हुए रिश्तों को भी तोड़ना चाहते हैं।

रिश्तों का अर्थ संबंध होता है। संबंध हमारा किसी भी चीज से या व्यक्ति से हो सकता है। लेकिन यहाँ पर रिश्ते का मतलब व्यक्तियों से संबंध से है। पर व्यक्ति से हमारा व्यवहार ऐसा होता है, जैसे हम किसी निर्जीव वस्तु के साथ व्यवहार कर रहे हों। कोई भी व्यक्ति जो जीवित है, उसकी अपनी इच्छाएँ होती हैं, अपेक्षाएँ होती हैं, वह अपनी मर्जी के अनुसार चलना चाहता है, करना चाहता है, लेकिन संबंधों के दायरे में, रिश्तों की सीमाओं के कारण वह अपनी मर्जी के अनुसार नहीं कर पाता, रिश्तों में बँधते ही उसकी स्वतन्त्रता छिन-सी जाती है, फिर उसे वही करना होता है, जो उस रिश्ते में उसे करना चाहिए। इस तरह रिश्तों में बँध कर व्यक्ति को दूसरों के अनुसार जीना होता है, यह सब एक सीमा तक तो सहनीय व करणीय होता है, लेकिन जैसे ही यह सब सहनशक्ति से बाहर होता है, व्यक्ति का गुबार फूट पड़ता है और यहीं से रिश्तों में दरार आनी शुरु हो जाती है। हर व्यक्ति दूसरों के सामने ऐसे प्रस्तुत होता है, जैसे वह कितना अच्छा है, कितना संतुलित व सामंजस्यपूर्ण है, लेकिन वास्तविकता में वह जो होता है, उससे कम लोगों का ही परिचय होता है। जो उसके करीबी होते हैं, वे ही जानते हैं कि असलियत में वह व्यक्ति कैसा है? यही वजह है कि जब व्यक्ति किसी से मिलता है तो शुरुआती दौर में सभी एक-दूसरे को पसंद करते हैं, लेकिन जब एक दूसरे को नजदीक से जानने लगते हैं, व्यक्तित्व से परिचित होने लगते हैं, तो फिर उसके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते। रिश्तों को संवारने के लिए हमें इस बात को समझना होगा कि हर व्यक्ति में अच्छाइयाँ व कमियाँ हैं, यदि किसी व्यक्ति को हम अपनाते हैं, तो केवल उसकी अच्छाइयों के साथ नहीं, बल्कि उसकी कमियों के साथ भी हमें उसे स्वीकारना पड़ेगा। यदि कमियाँ खलती हैं, तो उन्हें दूर करने का प्रयास करना होगा या फिर उन्हें दूर करने का प्रयास करना होगा या फिर उन्हें नजरअंदाज करना होगा। इस संसार में बहुत सारी चीजें ऐसी हैं, जिन्हें बदला नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में जो कुछ बदला जा सकता है, उसे ही बदलना पड़ता है। इसी तरह यदि सामने वाला अपने में परिवर्तन करने को तैयार नहीं है तो स्वयं में जो परिवर्तन संभव हैं, उन्हें करना चाहिए। लेकिन कभी भी स्वयं की व अन्य की बुराई को, कमियों को स्वीकारना नहीं चाहिए अन्यथा इसके परिणाम भयानक हो सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि एक बुराई छिपाने से कमियाँ व बुराइयाँ जन्म लेती हैं, जो व्यक्ति के पतन का कारण बनती हैं। इसलिए बुराइयों को दूर करने के लिए हमें ही सतत प्रयत्नशील होना चाहिए। रिश्ते दूर से बड़े मोहक लगते हैं, लेकिन रिश्ते में जुड़े

हुए लोगों को ही इसकी असलियत पता होती हैं, क्योंकि रिश्ते कभी भी एक तरह की गति से नहीं चलते, जैसे-समतल सड़क पर चलने वाली गाड़ी तेजी से बिना किसी डगमगाहट के दौड़ती है, लेकिन रिश्तों की गाड़ी जीवन में कभी मधुर होती है, कभी लड़खड़ाती है, कभी बहुत शोर करती है, कभी रूलाती है तो कभी रास्ते में ही ठहरकर रह जाती है। इसकी गति में समानता लाने के लिए हमें हर बार रिश्तों की इस गति को नए पन से शुरु करना पड़ता है। रिश्तों की इस दुनिया में यदि कोई सबसे अधिक चोटिल होता है तो वह अपने लोग होते हैं और यदि कोई सबसे अधिक खुशी महसूस करता है तो वो भी अपने ही लोग होते हैं। चूँकि लोग अपने होते हैं, इसलिए उनके सामने कोई दिखावा या परदा नहीं होता, व्यक्ति जैसा है, वैसा ही व्यवहार करता है। अनजान लोगों के सामने वह अपने व्यक्तित्व पर परदा डालने का प्रयास करता है, अच्छा बनने की कोशिश करता है, लेकिन अपनों के सामने वह ऐसा कुछ नहीं करता। इसलिए यदि व्यक्ति के मन में किसी और के लिए गुस्सा या नाराजगी है तो वह उसे अपनों पर ही निकाल देता है। अपनी खुशी भी वह सबसे पहले अपनों पर ही लुटाता है, लेकिन कभी-कभी जरूरत से ज्यादा नाराजगी, बात-बात पर कमी निकालना, उदासी, परेशानी आदि नकारात्मकता जीवन में रिश्तों की डोर को इस कदर उलझा देती हैं कि उन्हें फिर से सुलझाना सरल नहीं होता।

बुराई या निंदा सबको चुभती है और प्रशंसा सबको अच्छी लगती है। भले ही निंदा सच्ची हो, लेकिन अच्छी नहीं लगती और इसी तरह प्रशंसा भले ही झूठी हो, मन को भाती है। यदि रिश्तों को सँवारना है तो अपनों की बुराई या निंदा करने के बजाय प्रशंसा करने की आदत डालें। अपनों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करें, इसका मतलब यह नहीं कि कमियों को नजरअंदाज कर दिया जाए, बल्कि यह है कि कमियों को भी सकारात्मक रूख देते हुए दूर करने का प्रयास किया जाए। कमियाँ हैं, यह सभी जानते हैं, लेकिन दूसरों के सामने स्वीकारते नहीं हैं। लेकिन इन्हें सुधारने का प्रयास करके रिश्तों को संवारा जा सकता है।

भारत

मैं उस भारत का वासी हूँ
जिसकी माटी जग से न्यारी
हर लाल बहादुर है इसका
हर ललना इसकी हैं प्यारी

इसकी माटी में जन्मे हैं
आजाद भगतसिंह बलिदानी
महाराणा से रणवीर हुए
लक्ष्मी बाई जैसी रानी
इतिहास अमर है भारत का
जिसमें इनकी गाथा सारी

इस माटी में सोना चाँदी
हीरे मोती की खानें हैं
सोने की चिड़िया देश मेरा
यह कहते रहे बेगाने हैं
सर्दी गर्मी बरसात यहाँ
सब आती हैं ऋतुएं प्यारी

जिसके बांके गबरू ऐसे
जिसमें जग सारा थर्राया
नहीं छुपाता था सूरज जिसका
वह देश भी इससे घबराया
खुद जीयो सबको जीने दो
यह नीति है इसकी प्यारी

जिसके आंचल में बहती हो
गंगा जमुना जैसी सरीता
फिर कुदरत के वरदानों से
कैसे वह देश रहे रीता
शिवलिंग बने हिमपातो से
ऐसी इसकी आभा न्यारी

- कवि कृष्णा ''सौमित्र'' साहित्यालंकार
13/157, गली बम्बे वाली, नजदीक जैन चक्की,
बहादुरगढ़-124507 (हरियाणा)

अनमोल मोती

1: यदि हर कार्य यह समझ कर किया जाए कि भगवान मेरा साथी है तो असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।
2. एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
74. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली

हमारा आना-जाना

-भद्रसेन

हम सब का इस संसार में आना एक सन्तान के रूप में होता है। हजारों के देखते-देखते हम पालन-पोषण, शिक्षा, प्रगति के अवसर प्राप्त करते हुए अनेकों से अनेक तरह के संबंध बनाते-बढ़ाते हैं। इन सम्बन्धों का ताना-बाना ही जीवन का दूसरा नाम है। इन्हीं सम्बन्धों की सुस्थिति से ही हमारा जीवन आगे से आगे बढ़ता हुआ सफल होता है। इस सफलता का सारा श्रेय हमारे आपके सम्बन्धों के सच्चा-सुच्चा होने पर निर्भर है। तभी तो सभी अपने सम्बन्धियों से सच्चाई की आशा करते और रखते हैं। अत: इस आशा की मांग है कि हम इन सम्बन्धों को खिड़े-मत्थे पूरी तरह से पालें। इन सम्बन्धों की जड़ परिवार है, इस प्रथम रूप को सजाने वाला परम पिता परमात्मा ही है। अर्थात् उसके सजाए प्रकृति नियम ही हैं। प्रत्येक रचनाकर अपनी रचना को आगे सफल देखना चाहता है। इसलिए इन सम्बन्धों के सजाने वाले की इच्छा को सही रूप में रखना ही उस सत्ता को स्वीकार करना कहा जा सकता हैं यही उसकी आज्ञा का पालन है, और यही उसकी भक्ति,पूजा का मूल भाव, उद्‌देश्य कहा जा सकता है। किसी भक्त की भक्ति तभी सफल कही जा सकती है जब वह अपने भगवान से जुड़ा है। जैसे भक्त तथा भगवान का सम्बन्ध अपने-अपने स्तर पर स्व कर्त्तव्य के करने से कृतकृत्य होता है। उदाहरण के लिए कोई भक्त भगवान की भक्ति का अर्थ भजन करना समझता है। ऐसी स्थिति में उस भक्त का सच्चा-सुच्चापन यही है कि वह दिल से ईमानदारी से बिना दिखावे के भजन में तल्लीन हो।

जैसे कि प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि मेरे भक्त, सेवक, साथी, सम्बन्धी हर स्थिति में हर समय मेरे प्रति सच्चे-सुच्चे हों। ऐसी ही स्थिति में वे मेरे प्रिय, स्नेही कहे जा सकते हैं। ऐसे ही इस जग के बनाने वाले की भी यही इच्छा, आशा, आज्ञा कही जा सकती है कि उसने इस जग को जिस दृष्टि से सजाया है, हम उसी दृष्टि को सही रूप में सामने लायें। यह सारा संसार हर तरह से आपस के सम्बन्धों का सुन्दर रूप है। यहाँ कहीं किसी बनी वस्तु के हिस्से आपस में जुड़े हैं, तो कहीं पति-पत्नी, माता-पिता-सन्तान आपस के सम्बन्धों से जुड़े हैं। अत: इन सम्बन्धों को जोड़ने वाले की यही चाहना है, कि यह सम्बन्ध सफल हों।

जग में जो कुछ भी माना जाता है, वह अपने अंशों, कारणों का मेल रूप ही है। इस जग में बनने वाली चीजें दो प्रकार की हैं। एक तो हमारे बर्ताव में आने वाली भौतिक चीजें हैं। इन चीजों में हम स्पष्ट रूप में उस-उस के अंशो, कारणों का मेल (संयोग, सम्बन्ध) देखते हैं। इन में से कुछ चीजों का सम्बन्ध हमारे जैसे करते हुए स्पष्ट दिखते हैं। इस जग में दूसरी सामने आने वाली चीज है-इन वर्ते जाने वाली भौतिक चीजों को बर्तने वाले जीवित प्राणी। इनका जन्म, जीवन भी शरीर-इन्द्रिय-मन (अन्त:करण) प्राण आत्मा के संयोग से सामने आता है। ज्ञान-कर्म इन्द्रिय, प्राण आदि का कार्य हम अपने जीवन व्यवहार में स्पष्ट देखते हैं। तभी तो आँख आदि इन्द्रिय अपना-अपना कर्त्तव्य निभाती हैं।

जैसे कि हम प्रतिदिन के व्यवहार में देखते हैं कि अनेक यंत्र अपना-अपना कार्य करते हैं। ये बल्ब, पंखा आदि यंत्र तभी कार्य करते हैं, जब बिजली-बटन-यन्त्र का परस्पर ताल-मेल होता है। जैसे आज बल्व-टयूब-पंखा, रेडियो, दूरदर्शन, फ्रिज आदि अनेक यंत्र हमारे व्यवहार में बर्ते जा रहे हैं, ऐसे ही हमारे जीवन व्यवहार में देखने-सुनने-बोलने-चलने आदि की अनेक क्रियाएें होती हैं। इन सबके पीछे भी कुछ का ताल-मेल होता है। यहाँ इन्द्रियाँ यंत्र की तरह होती हैं, मन बटन के समान है और आत्मा बिजली के तुल्य इन्द्रियों को चेतना, शक्ति, प्रेरणा देती है। इनका सम्बन्ध कर्मफलदाता, न्यायकारी परमेश्वर हर जीव के कर्मो के अनुसार ही करता है। इन सब का ताल-मेल जब तक बना रहता है तब तक हमारा जीवन चलता रहता है।

शरीर-इन्द्रिय-मन-आत्मा का यह ताल-मेल सम्बन्ध जब कभी किसी दुर्घटना, विशेष रोग के कारण या लम्बे समय के बाद ढीला पड़ जाता है। तो वह सम्बन्ध विच्छेद-मौत, वियोग का कारण बन जाता है। यही बात हम अपने चारों ओर इन बर्ते जाने वाली चीजों में भी देखते हैं। जीवों और चीजों के

आने-जाने की व्यवस्था, प्रक्रिया एक जैसी ही है। इसलिए जरूरत इस बात की है, कि इस बर्ते जाने वाली चीजों से ही अपने जीवन को समझें। उनको और जीवन को सही ढंग से वर्तकर, जीकर अपने आप को सफल बनायें।

इस संसार में हर आने वाला देर-सवेर यह अनुभव करता है कि यहाँ आकर बहुत कुछ किया जा सकता है। इसलिए प्रत्येक का जीवन बहुत कुछ मन पसंद करने का एक स्वर्ण अवसर है। जैसे कि विद्यालय, महाविद्यालय में किसी को पढ़ने का अवसर मिलता है। यदि वह इस अवसर का लाभ उठाता है, तो वह पढ़ा-लिखा कहलाता है। फिर इसके आधार पर सब जगह तरक्की करता है। ऐसे ही किसी को कहीं परीक्षा का अवसर अथवा साक्षातकार का या उच्च स्तर पर खेल का अवसर प्राप्त होता है। जो उस अवसर का लाभ उठाता है वही सफल होने से जहां प्रशंसा प्राप्त करता है, वहाँ आगे के लिए वह अपना स्थान भी सुनिश्चित कर लेता है।

हां, हमने यह पहले विचार किया है कि सभी का संसारी जीवन आपस के अनेक प्रकार के रिश्तों पर निर्भर है। ऐसी स्थिति में जीवन को सार्थक सफल बनाने वाले सम्बन्धों को सच्चे-सुच्चे रूप में निभाना कम से कम संसारी जीवन की सफलता है। इन सम्बन्धों को सजाने वाला जग का सर्जनहार भी यही चाहता है कि संसार में आने वाला प्रत्येक प्राणी सुनहरे मौके का लाभ उठाकर अपने आप को सफल, सुखी बनाए।

नि-सन्देह भारतीय परम्परा में ईश्वरदर्शन, मुक्ति मानव जीवन का चरम लक्ष्य माना जाता है। यह भी तभी सम्भव है, जब पहले प्रतिदिन का जीवन शांत, सफल होता है। तभी तो कहा-'अशान्तस्य कुतः सुखम्' गीता 2.66। यह सफलता भी स्वस्थ रहते हुए, स्वच्छता के पालन, नशामुक्ति पूर्वक रिश्तों के निभाने से ही होती है। जैसे कि हम किसी की करनी को ईमानदारी से निभाने पर ही याद करते हैं।

- 182, शालीमार नगर, होशियारपुर (पंजाब)

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

आँखों की रक्षा के लिए क्या करें?

हम सन्ध्या के मन्त्रों में प्रतिदिन बोलते हैं, ओं चक्षु-चक्षु, ओं भुव: पुनातु नेत्रयो, ओं पश्येम शरद: शतं अर्थात् प्रभु से प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु हमारी आँखें निरोग हों, पवित्र हों और इनसे कम से कम 100 वर्ष तक देखते रहें परन्तु केवल मन्त्र बोलते रहने से कुछ नहीं होता। मन्त्र तो एक विचार है कि आँखों की रक्षा करो। अब प्रश्न है, कैसे करें? यजुर्वेद के एक मन्त्र में बताया है-'चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्' अर्थात् यज्ञ के द्वारा आँखों की रक्षा करो। ऐसे काम करो जिनसे नेत्रों की ज्योति बनी रहे और ऐसा काम मत करो जिनसे आँखों को हानि पहुँचे। ऐसे कार्यों का वर्णन निम्नलिखित है-

1. प्रात: काल उठते ही सबसे पहले ताजा पानी से कुल्ले करके आँखों को छींटे मार-मार कर अच्छी तरह धोना चाहिए, बच्चों की आँखें भी धोनी चाहिएं। जो ऐसा नहीं करते उनकी आँखें प्राय: बीमार रहती हैं।
2. प्रतिदिन जब भ्रमण करने के लिए जाओ तो उगते हुए सूर्य को एक दो मिनट तक देखते रहो।
3. यदि नज़ला जुकाम नहीं है तो हरी-हरी घास पर नंगे पाँव चलो।
4. शीर्षासन करो परन्तु एक-दो मिनट से अधिक नहीं।
5. प्रतिदिन दाँतों को साफ करना आवश्यक है क्योंकि दाँतों की गन्दगी का प्रभाव आँखों पर पड़ता है। दाँतों के साथ-साथ जीभ और गले को भी साफ करो।
6. पाँव के तलवों और नाखूनों को स्वच्छ रखो। इनमें कभी-कभी तैल की मालिश करते रहो।
7. शराब, धूम्रपान आदि सभी प्रकार की नशीली वस्तुएँ नेत्रज्योति को जबरदस्त नुकसान पहुँचाती हैं, इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।
8. माँस खाने वालों के तो बच्चे भी आँखों के रोग लेकर पैदा होते हैं। माँस खाने से आँखों में चर्बी बढ़ जाती है और शीघ्र अन्धापन आने लगता है।
9. लाल मिर्च के स्थान पर काली मिर्च का सेवन करें।
10. अनुभव बताता है कि वनस्पति, घी, तेल का लगातार सेवन आँखों की रोशनी को कम करता है। इसलिए थोड़ा ही सही परन्तु देशी घी का प्रयोग करें। यदि देशी घी उपलब्ध नहीं है तो वनस्पति घी के पकवान का अधिक सेवन न करें जैसे प्रतिदिन पूड़ी पंराठें खाते रहना।
11. पेट को साफ रखें कब्ज न होने दें। सुपाच्य भोजन ही सेवन करें और नित्यप्रति थोड़ा दूध अवश्य लेते रहें। चाय का अधिक सेवन न करें।
12. फलों में सन्तरा, अनार, गाजर का रस सेवन करना लाभदायक है क्योंकि इनमें विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक है जो नेत्रों के लिए उपयोगी हैं।
13. यदि आँखों में खारिश होती है या लाल सी रहती है तो त्रिफला या भुनी हुई शुद्ध फिटकरी के लोशन से धोना चाहिए।
14. अति मैथुन से आँखें अन्दर धंस जाती हैं और दृष्टिहीन होने लगती हैं।
15. निरन्तर रात्रि जागरण से आँखें खराब होने लगती हैं।
16. कभी लेटकर नहीं पढ़ना चाहिए।
17. चलती बस, गाड़ी में नहीं पढ़ना चाहिए।
18. बहुत कम या अधिक रोशनी में नहीं पढ़ना चाहिए।
19. धूल, धूआँ और तेज धूप से आँखों को बचाकर रखो। धूल उड़ रही हो और तेज धूप में जाना भी पड़े तो चश्मा लगाकर, सिर पर कपड़ा डालकर जाओ।
20. आँखों में कभी गंदे हाथ या उंगली मत लगाओ।
21. अधिक शोक चिन्ता करने से भी आँखों पर कुप्रभाव पड़ता हैं। इसका शीघ्र निवारण करो।
22. हर समय टी.वी. नहीं देखना चाहिए जब कभी-कभी देखो तो दूर से देखना चाहिए। निकट से देखने पर आँखों पर जोर पड़ता है।
23. अन्त में पूर्वजों के उस फार्मूले को भी अमल में लाओ, ज़िसे इस प्रकार बोलते हैं।

आँखों में अंजन दांतों में मंजर नितकर, नितकर।
नाक में उंगली, कान में तिनका मत कर, मत कर॥

सफल जीवन की सार्थक ऊर्जा

-आचार्य अशोक सहजानन्द

हमारे जीवन के दो मुख्य घटक हैं-सुख और दु:ख। आदमी सुख चाहता है, दु:ख नहीं चाहता। पर शायद एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसने जीवन में सुख ही सुख भोगा हो, दु:ख का अनुभव नहीं किया हो या जिसके जीवन में दु:ख ही दु:ख आये हों, सुख न आया हो। यह निश्चित तथ्य है, एक के बिना दूसरा होता ही नहीं। सुख के समय सुखी न बनना और दुख के समय दु:खी न बनना, बंधन से मुक्ति पाने की कला है।

अशुभ कर्मो का विपाक होने पर दु:ख के प्रस्तुत होने पर दु:खी नहीं होना, समता के साथ कर्मफल को भोगना प्राय: संभव नहीं बनता। आज का मानव उस कला से परिचित नहीं है। इसलिए समस्याएँ विकराल बन जाती हैं। समस्या यह है कि व्यक्ति कर्मफल को भोगते समय अपने विवेक का उपयोग नहीं करता। पुण्य का उदय आता है तो व्यक्ति अहंकार से भर जाता है। वह आदमी को आदमी नहीं समझता। जब पुण्य का विपाक आता है उदय आता है, तब सुविधा भी मिलती है। व्यक्ति उसे भोगता है। किन्तु वह उसमें इतना आसक्त न बने,सुख भोगने में ही लिप्त न हो जाए, जिससे पुण्य के फल का भोग सघन पाप का कारण बने।

सुख और दुख- इन दोनों स्थितियों में जो सम रहना नहीं जानता, आसक्ति और पीड़ा से मुक्त रहना नहीं जानता, वह न जीवन की कला को जानता है, न कर्म बंधन से छुटकारा पाने की कला को जानता है। किस प्रकार सुख की अवस्था में गर्व से मुक्त रहे किस प्रकार दु:ख की अवस्था में प्रसन्न रहे दीन-हीन न बने यह छोटी सी बात समझ में आती है तो मानना चाहिए, जीवन जीने की सबसे बड़ी कला समझ में आ गई।

लाभ, सुख, जीवन, प्रशंसा और सम्मान-ये पाँच अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। अलाभ, दु:ख, मरण, निन्दा और अपमान-ये पाँच प्रतिकूलता की स्थितियाँ हैं। इन दोनों में सम रहन ही धर्म है। जहाँ विषमता आई धर्म खंडित हो गया। लाभ में भी तनाव, अलाभ में भी तनाव अनुकूलता में भी तनाव, प्रतिकूलता में भी तनाव। जो विवेक करना नहीं जानता, वहाँ दोनों ही परिस्थितियों में समस्या को निमंत्रण दे देता है। लाभ और हानि इन दोनों ही स्थितियों में हम अपने विवेक में समता पैदा कर सकते हैं, यह स्थिर नहीं रहता। जब यह भावना आ जाती है, तब न लाभ तनाव पैदा कर पाता है न हानि तनाव पैदा कर पाती है। यह मान लिया जाए-संयोग अनिन्य है। संयोग का वियोग निश्चित होता है तो वियोग के होने पर भी अवस्था प्राप्त न होने पर भी तनाव नहीं आएगा। मस्तिष्क का वह प्रकोष्ठ जो समता पैदा करता है, जागृत हो जाए तो तनाव पैदा नहीं होगा। जागृत करने का तात्पर्य है मस्तिष्क को इस प्रकार साध लेना कि वह सम और विषम दोनों स्थितियों में एकरूप रहे। पाँच अनुकूल और पाँच प्रतिकूल इन दस परिस्थितियों के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदल जाए तो समस्या का समाधान सामने दिखाई देगा। जिस व्यक्ति ने अपने आपको नहीं देखा, आत्मा को नहीं देखा, उसकी पदार्थ के प्रति होने वाली भ्रांति कभी टूटेगी नहीं। उस व्यक्ति के पदार्थ के प्रति भ्रांति टूटती है जिसने अपने आपको देखा है। जब हम अपनी आत्मा को जानने की दिशा में आगे बढ़ेगे तब हमारी पदार्थ विषयक भ्रांतियाँ टूटेंगी। हमारा प्रशिक्षण अलग प्रकार का बन जाएगा। जब तक पदार्थ के प्रति आकर्षन जगत में रहेंगे, अपने भीतर झांकने का प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक भ्रांतियाँ बनती ही चली जाएँगी।

समता और तनाव-मुक्ति में अन्ततः सम्बन्ध है समता की उपलब्धि का अर्थ है-तनाव से मुक्ति। हमारी अन्त: चेतना का झुकाव सदा समता की ओर रहता है किन्तु व्यवहार का गुरुत्वाकर्षण इतना तीव्र होता है कि वह विषमता की ओर खींचता है। एक ओर से समता की प्रेरणा प्राप्त होती है, दूसरी ओर से विषमता की प्रेरणा, यह बड़ी समस्या है। जो व्यक्ति समता के साथ जीते हैं उनको महान आदर्श माना गया है। जिन लोगों ने विषमता का जीवन जिया है, उनका इतिहास तो है पर उन्हें आदर्श व्यक्ति नहीं माना गया। उनके जीवन का अनुसरण किसी ने नहीं स्वीकारा।

राखी की लाज

- लालमन आर्य

अमिट स्नेह की राखी भैय्या आज बंधाइये रे,
समय पड़े पर इस राखी का मूल्य चुकाइये रे।
कर्मवती राखी भिजवाई
हुमायूँ ने थी वह अपनाई
की रक्षार्थ चढ़ाई ना इतिहास भुलाइये रे।
भरे पड़े इतिहास हमारे
राखी मूल्य चुकाया प्यारे
तन मन धन भी बारे उनसे शिक्षा पाइये रे।
भ्राता कितने सच्चे कहावें
भ्रात धर्म के धर्म निभावे
काम समय पर आवें, भ्राता वही कहाइये रे।
सूत और रेशम के धागे
देखन में साधारण लागे
पर निर्भय बढ़े आगे निज कर्तव्य
निभाइये रे।
जेवर कपड़ा और रूपेया
असली मूल्य वही यह भैया
कभी भंवर में नैय्या अटके पार लगइये रे।
रहे सदा भगवान सहाई
जुग-जुग जिये लालमन भाई।
वेद धर्म सुखदाई इसको न बिसराइये रे।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

—व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **पत्नी**-सोने की चैन कब दोगे?
  पति-चैन से सोने कब दोगी? जब सोने दोगी तब सोने की चैन दूंगा।
- **चाचा** वोट डालकर बाहर आए और पोलिंग **एजेण्ट से पूछा**-तेरी चाची वोट डाल गई क्या? एजेण्ट ने लिस्ट चैक करके कहा जी चाचा वोट डाल गई।
  चाचा भरे गले से बोले-जल्दी आता तो शायद मिल जाती।
  पोलिंग एजेण्ट-क्यों चाचा आप साथ नहीं रहते।
  चाचा-बेटा उसे मरे 15 साल हो गये हर बार वोट डालने आती है पर मिलती नहीं।
- **सरदार की मां** की तबियत खराब हो गई। हॉस्टपीटल ले गये डाक्टर ने कहा-2 टैस्ट होगें। सरदार जोर जोर से रोने लगा-हे भगवान अब क्या होगा। मां तो अनपढ़ है। टैस्ट कैसे देगी।
- **एक औरत** ने पंडित जी से घर की खुशहाली का उपाय पूछा?
  पंडित जी बोले-पहली रोटी गाय को खिलाया करो और आखिरी कुत्ते को।
  औरत-पंडित जी मैं, ऐसा ही करती हूं। पहली रोटी खुद खाती हूँ और आखिरी, रोटी.... अपने पति को खिलाती हूँ।
- **हरीश**-तुम्हारी आंख क्यों सूजी हुई है।
  पप्पु-कल मैं अपनी पत्नी के जन्मदिन पर केक लाया था। हरीश-लेकिन इसका आंख सूजने से क्या संबंध?
  पप्पु-मेरी पत्नी का नाम 'तपस्या' है लेकिन केक वाले बेवकुफ ने लिख दिया समस्या।
- **लड़की**-मेरी एक सांस पर सौ लड़के मरते हैं
  लड़का-जल्दी से डाक्टर को दिखा ले बाकि मुझे तो स्वाईन फ्लू वाली दिक्कत लग रही है।

पाखण्डों की निर्माण शाला-पुराण

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

आए दिन नए-नए पाखण्डी गुरुओं के चेहरे जनता के सामने आ रहे हैं। वास्तविकता यह है कि इनका निर्माण उन पुराणों से ही हो रहा है जिनकी आलोचना सत्यार्थप्रकाश व अन्य आर्य साहित्यों में की गई है। आशाराम बापू श्रीकृष्ण व उनके साथ गोपियों व राधा की रासलीला का वर्णन करते नहीं थकते थे। होली पर वह विशेष प्रकार की होली अपने शिष्य-शिष्याओं व सहस्रों की भीड़ के साथ खेलते थे। सभी ने टीवी पर सीधा प्रसारण देखा। उपदेश में भी गोपियाँ जब यमुना में नग्नावस्था में स्नान कर रही थीं तब कृष्ण ने यमुना के किनारे से वस्त्र चुरा लिए वह वस्त्रों को लेकर कदम्ब के वृक्ष पर बैठ गए। जब गोपियों ने स्नान कर यमुना के किनारे पर देखा तो वस्त्र नहीं मिले उन्हें पेड़ पर कृष्ण दिखाई दिया। तब अपने वस्त्र मांगे तो कृष्ण ने कहा पानी से बाहर आओ तब वस्त्र दूँगा। ऐसे उपदेश और उन पर ही आचरण किया।

इस प्रकार गोपियों को जल से बाहर आने पर विवश किया। ब्रह्मवैवर्तपुराण में ऐसा दिया है। इस प्रकरण को सरिता मुक्ता में भी प्रकाशित किया गया था कि क्या यह भगवान का कार्य है? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुराणों में ऐसे अनेक कथानक व पाखण्ड पूर्ण प्रक्षिप्त विषयों को जनता के सामने रखा परन्तु यह हिन्दू जाति अपने भगवान् व महान् आत्माओं पर कोई भी कीचड़ उछालता है तो बड़ी प्रसन्न होती है। भागवत कथा होती है तो कृष्ण को बताते हैं कि मनिहार बन चूड़ी पहनाने जाता है। कुब्जा के साथ संसर्ग करता है। कहीं गगरी-मटकी फोड़ता है, तो कहीं दधि की चोरी करता है, ऐसा भागवत वाले सुनाते रहते हैं और जनता से 'श्री कृष्णचन्द्र की जय' का नारा भी लगवाते रहते हैं। इन्होंने कृष्ण का चरित्र इतना बुरा बनाकर रख दिया जिसे पढ़कर भी लज्जा आती हैं परन्तु पौराणिक भाई इस पर भी लीपा-पोती करते हैं, कहते हैं कि श्रीकृष्ण वस्त्रों को इसलिए चोरी करके ले गये थे क्योंकि वह जल जो वरूण देवता का निवास है, वहाँ नग्न होकर नहीं नहाना चाहिए। इसलिए कृष्ण ने यह लीला की थी, किन्तु लीपापोती करते समय यह भी सोचना चाहिए कि वस्त्र पहनें भी होती तो क्या पानी वस्त्रों के अन्दर नहीं जाता।

ऐसी एक नहीं कितनी ही लीलाएं पुराणों में भरी पड़ी हैं। महर्षि लिखते हैं कि श्रीकृष्ण का चरित्र तो इतना महान् है कि ऐसा महात्मा पुरुष तो ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकता। श्रीकृष्ण महाविद्वान्, चरित्रवान, ज्ञानवान् पुरुष थे। जीवन में परस्त्री अर्थात् रूक्मिणी को छोड़ किसी अन्य स्त्री की ओर नहीं देखा। उनके चरित्र पर जो कीचड़ उछाली गई है, वह उनके जीवन से अन्याय किया गया है। उनका चरित्र उच्चकोटि का था। ऐसे ही आशाराम बापू का सुपुत्र नारायण भी आश्रम की कन्याओं से कहता था कि पहले जन्म में मैं कृष्ण था और तुम सब गोपी थीं। यह कहकर उनके साथ वह मनमानी करता था। इन्हीं पुराणों की ऐसी बातों का उदाहरण गुरमीत राम रहीम ने देकर अपने चारों ओर शिष्याएँ एकत्र कर लीं और उनसे रास रचाता था तथा उसने जो कन्याएँ साध्वी बनी थीं अथवा बनायी गयीं, उनके साथ बलात्कार किया और उसका नाम ही बलात्कारी बाबा रख दिया गया। ऐसे अनेक बाबा हैं, जिन्होंने पुराणों के रास्ते पर चलकर जनता को भ्रमित कर अपने कुकर्मों को कर अपनी इच्छा पूर्ति की है। भीमानन्द, नित्यानन्द, परमानन्द, रामपालदास, गुरमीत राम रहीम तथा एक और नाम प्रकाश में आया था राधे माँ का जो कि पुराणों पर ही रखा गया। राधा जो पुराणों में श्रीकृष्ण के साथ रहती थी। जबकि सत्य यह है कि राधा नाम की कोई स्त्री ही नहीं थी। केवल एक थी जब कृष्ण शिशु अवस्था में थे इनकी मामी थी राधा। राधा का नाम कृष्ण के साथ व्यर्थ में ही जोड़ा गया है। हमारे महापुरुषों का चरित्र-हनन करने में कोई कमी नहीं छोड़ी गई। बाल्यावस्था से अन्त तक श्रीकृष्ण के जीवन में कहीं भी कोई भी कैसी भी दुश्चरित्रता अथवा अवैदिक कार्य नहीं मिलता वह वेदों के विद्वान थे, योगी थे, ब्रह्मचारी थे, गीता का उपदेश उनकी पवित्र वाणी है। महाभारत में शान्ति के दूत हैं। अर्जुन को गीता का सार सुनाने वाले देवता स्वरूप तेज वाले सुदर्शन-चक्रधारी हैं। भला हो भारतीय जनता का जो महापुरुषों पर कीचड़ उछालने वालों की पूजा करने लगती है। भागवत सुनाने वालों की जयघोष करने लगती है और पुराणों से बने आज के तथाकथित झूठे भगवानों को स्वीकार कर लेती है और थोड़े-बहुत नहीं, लाखों-करोड़ों में भक्त शिष्याएँ बन जाती हैं। अपना तन-मन-धन सब इन झूठे गुरुओं को अर्पित कर देते हैं। जब तक इन गुरुओं की पोल खुलती है, तब तक सब कुछ लुट चुका होता है।

आर्य समाज एवं स्वतन्त्रता संग्राम

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी क्रान्ति के अग्रदूत थे महर्षि राष्ट्रभक्त ही नहीं विश्व प्रेमी भी थे। उनका राष्ट्र प्रेम विश्व प्रेम का साधक है बाधक नहीं। कोई भी राष्ट्र महर्षि दयानन्द प्रणीत राष्ट्र रक्षा के सिद्धान्तों से अपने-आपको सच्चे अर्थों में स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय और अवण्ड बना सकता है, यही महर्षि की विशेषता है।

हमारी जाति में कितने बड़े शूरवीर योद्धा, त्यागी व बलिदानी पुरुष एवं स्त्रियाँ हुई हैं और उनके भी त्याग के पीछे वैदिक संस्कृति व महर्षि दयानन्द जी का शंखनाद प्रेरणा स्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश ने कितने ही वीरों को सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार किया है। आर्य वीरों का बलिदान ही इस देश की सम्प्रभुता को बनाये रखने में समर्थ हुआ है। शत-शत नमन उन आर्य वीरों को, उन माताओं और बहनों को तथा उन महान् पुरुषों को जिनके बलिदान और त्याग से एक स्वतन्त्रता रूपी उपवन आज भी हरा भरा है।

सर्वस्व अर्पण करने वाले रणबाँकुरों को फाँसी का फन्दा चूमना पड़ा, अनेक यातनाओं को सहना पड़ा, माताओं की गोदियाँ सूनी हो, बहनो की राखियाँ भाईयों की कलाइयों की प्रतीक्षा करती रही, देवियों का श्रृंगार छिन गया परन्तु अन्ततः स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली गई। इस स्वतन्त्रता की प्राप्ति में आर्य समाज के आर्य वीरों ने कितना बलिदान किया। यह बात कोई निष्पक्ष इतिहासकार ही लिखेगा जिसे इस वास्तविकता का ज्ञान होगा। सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा ने कितनों को उद्वेलित किया, कितनों को झिंझोड़ कर रख दिया। अंग्रेज सरकार के प्रशासन में आर्य समाज का सदस्य होना ही इस बात का प्रमाण था कि वह इन गोरों की सरकार का विरोधी था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राजस्थान में स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से भी अच्छा होता है, इस मन्त्र का प्रवचन किया था। यह शब्द उस समय के आर्यों में ज्वाला बनकर उभरे थे।

कन्हैया लाल आर्य

आर्य जाति के जीवन में वह सबसे बड़ा भारी दुर्दिन था, जबकि योगीराज कृष्ण जी के लाख समझाने पर भी भरे दरबार में **''सूच्यग्रं नैव दस्यामि विना युद्धेन केशव''**-हे कृष्ण। बिना युद्ध किये एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा की घोषणा करके राष्ट्रद्रोही कुपथगामी दुर्योधन ने इस देश के लिए प्रलयंकर महाभारत के युद्ध की चिंगारियों को हवा दी थी। महर्षि दयानन्द जी ने दुर्योधन को इस कुकृत्य के लिए कुल घातक और कुल हत्यारा तक बताया है। उसी समय से राष्ट्र में सार्वभौम चक्रवती राज्य छिनकर दासता की दीनतामयी तथा दयनीय घड़ी प्रारम्भ हुई। ऐसी अवस्था में भारत किसी उद्धारक, अपने मृतप्रायः तन में संजीवनी धारक, कुशल वैद्य की प्रतीक्षा में था, जो कि उसके समस्त दुःखों, क्लेशों का पूर्ण निधन करके सर्वविध स्वास्थ्य लाभ करा सके और उसके यथार्थ स्वरूप को दिखा सके। ऐसे सर्वथा विपदाच्छन्न कराल काल में भारत के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने के अनन्तर भारत एवं विश्व के उद्धारार्थ ऋषि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आर्य समाज एवं स्वाधीनता सग्राम-इसमें कोई सन्देह नहीं कि आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने 1875 में की थी परन्तु उसकी भूमिका वह कई वर्षों से बना रहे थे। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार जिसके सुदृढ़ दासता के लोहे के शिकंजे में पड़ा यह देश शताब्दियों से स्वतन्त्रता के लिए छटपटा रहा था की घातक चालों के परिणामस्वरूप यहाँ की जनता में उस समय उस शासन के विरूद्ध सर्वप्रथम जो शक्तिशाली विस्फोट हुआ था वही यही स्वाधीनता का प्रथम महान् संगम था, जिसे उन विदेशी शासकों ने प्रखर देशभक्तों को बदनाम

कर असफल करने के लिए गदर संज्ञा प्रदान की।

अंग्रेजों के दासत्व के चोले को अपने कन्धों से उत्तर फेंकने का दृढ़ निश्चय भारत की जनता कर चुकी थी परन्तु यह योजना तैयार कर उसे सफलता की ओर ले जाने वाले ऋषिवर दयानन्द सरस्वती, उनके विद्या दाता गुरु विरजानन्द सरस्वती तथा उनके गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी भी सम्मिलित थे, इस तथ्य की पुष्टि करते हुए स्वामी वेदानन्द सरस्वती जैसे महान् लेखक लिखते हैं:-''विरजानन्द ने अपने प्रज्ञानेत्रों से साक्षात् कर लिया था कि भारत की दुर्दशा के प्रधान दो कारण है-एक अनार्ष ग्रन्थों का प्रसार और दूसरा विदेशी राज्य। आज इतिहासकार मुक्त कण्ठ से कहते हैं कि विरजानन्द तथा उनके गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी ने इस संग्राम का प्रारम्भ कराया था। इसके पश्चात् वृद्ध पूर्णानन्द जी ने युवा बलिष्ठ दयानन्द को इस ओर प्रेरित किया। ऋषि दयानन्द जी ने अपने समयवस्क के नाना द्योंद्योपन्त राव जैसे क्रान्ति यज्ञ के यजमान को प्रेरित किया। तभी नाना साहब के सैकड़ों सन्देश वाहक साधु फकीरों आदि के रूप में सभी दिशाओं में क्रान्ति का प्रारम्भ हो गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती नाना साहब पेशवा के गुरु थे। यहाँ इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि यदि स्वामी दयानन्द न होते तो नाना साहब पेशवा ने 1857 की हार के पश्चात् आत्महत्या कर ली होती। ऋषि दयानन्द ने स्वामी पूर्णानन्द से ब्रिटिश अत्याचारों की हृदय विदारक कथा सुनकर किस प्रकार तात्या टोपे और नाना साहब से निकट सम्पर्क स्थापित किया और किस प्रकार योजना बद्ध रूप से क्रान्ति के इन नेताओं को संगठित करने का प्रयत्न किया, यह इतिहास का एक रोचक किन्तु अलिखित अध्याय है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जिन असाधारण विचारों से भारत के राजनैतिक वातावरण में एक अर्पूव हलचल उत्पन्न हुई तथा देशवासियों ने उनकी राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित हो, जिस प्रखरता के साथ उस दिशा में अपने चिन्तन को आगे बढ़ाया, उनमें से उनके प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 8, 10, 11 ने राष्ट्र के नवयुवकों को बलिदान हेतु उद्यत किया। इसके साथ आर्याभिविनय के लेखन द्वारा भी प्रेरणा प्रदान की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संशोधित और परिवर्धित संस्करण उदयपुर आकर प्रकाशित करने हेतु कार्य करना आरम्भ किया। वहाँ आप का सम्पर्क महाराणा सज्जन सिंह से हुआ। ऋषि जी के सम्पर्क में आकर महाराणा सज्जन सिंह पर इतना प्रभाव पड़ा कि सज्जन सिंह ने अंग्रेजों के नियमों को मानने से इंकार कर दिया। महर्षि दयानन्द को महाराणा सज्जन सिंह से बहुत सी आशायें थी परन्तु दुर्दैव वश यौवन अवस्था में यह राष्ट्रभक्त संसार से विदा हो गया। तत्पश्चात् ऋषि जी ने उनके उत्तराधिकारी फतह सिंह जी को स्वाभिमान, प्रखर राष्ट्रवादी विचारों का बना दिया।

कांग्रेस का कार्यक्षेत्र महर्षि दयानन्द के संसर्ग से प्रखर देशभक्ति, स्वगौरव एवं स्वाभिमान का पाढ़ पढ़े हुए विशुद्ध एवं कट्टर देशभक्त आर्य सामाजियों के हाथ में आया तो उन्होंने अपने प्रभाव से उस विदेशी एवम् गुप्त योजना रखने वाली कांग्रेस की विचारधारा एवं कार्यक्षेत्र तथा लक्ष्य को एक नया मोड़ दे दिया। ऋषि दयानन्द के जिन राजनैतिक शिष्यों ने कांग्रेस को राष्ट्रवाद एवं पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति की नई दिशा दिखाई उन व्यक्तियों मं सबसे पूर्व तथा प्रमुख नाम श्री महादेव गोविन्द रानाडे का आता है। ये महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम भक्तों में से थे। इसके आगे इस राजनैतिक शिष्य परम्परा में आने वाले महानुभावों ने उस अंकुर की सींच-सींच कर विशाल वटवृक्ष के रूप में परिणत कर दिया, ऋषि दयानन्द सरस्वती की इस देशभक्त परम्परा में महाशय रानाडे के पश्चात् उनके राजनैतिक शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले का नाम आता है। महात्मा गान्धी गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। कहने का अभिप्राय यह है कि देश प्रेम की जो प्रबल गंगाधारा ऋषि दयानन्द सरस्वती रूपी हिमालय से प्रार्दुभूत हुई वह रानाडे और गोखले रूपी क्षेत्रों को सींचती हुई अन्त में महात्मा गांधी रूपी क्षेत्र में जाकर हरियाली उत्पन्न कर देने का कारण बनी। देश प्रेम की भावना का

अधिक अंश महात्मा गांधी को उस शिष्य परम्परा से प्राप्त हुआ जिसके-आदिम प्रवर्तक तथा आदिम आचार्य ऋषि दयानन्द सरस्वती थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों की छाप लगभग सभी स्वतन्त्रता सेनानियों पर किसी न किसी रूप में पड़ी है। हम यह देखते हैं कि ऋषि दयानन्द की छाप किन्हीं सज्जनों पर साक्षात और किन्हीं पर परोक्ष रूप से पड़ी है जिन पर परोक्ष रूप में पड़ी है, उन सज्जनों में दादा भाई नैरोजी का नाम प्रमुख रूपेण मिलता है। सैनिक समाचार 20 अक्टूबर 1968 से भारत सरकार के सुरक्षा विभाग द्वारा प्रचारित एक लेख छपा, वह इस प्रकार है-दादा भाई नैरोजी पहले सज्जन थे, जिन्होंने भारत पर अंग्रेजों के अधिकार जमाये रखने के विरूद्व लिखने वाले, पहले हिन्दुस्तानी थे, जिन्होंने शब्द (स्वराज्य, स्वशासन) प्रयुक्त किया। एक दिन लोकमान्य बाल गंगाधार तिलक ने हैरान होकर देखा 'कि पारसी देशभक्त दादाभाई नैरोजी 'सत्यार्थ प्रकाश' के पन्ने पलट रहे हैं, आपने विनोद में पारसी देशभक्त से प्रश्न किया कि क्या आप आर्य समाजी बन गये? ''नहीं, मुझे स्वराज्य समर में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ से भारी प्रेरणा प्राप्त होती है,'' दादा भाई ने उत्तर दिया।

महर्षि दयानन्द जी की शिष्य परम्परा बहुत लम्बी है जिसमें, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी, इन्द्र विद्या वाचस्पति, महाशय कृष्ण, महाशय वीरेन्द्र, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, सुखदेव महात्मा आनन्द स्वामी तथा उनके पुत्र रणवीर जी, पं. मनसा राम, वैदिक तोप, स्वामी बेधड़क जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, वीर सावरकर, पं. दामोदर सातवलेकर जी, आचार्य, वैद्यनाथ जी, डॉ. सत्यकेतु, विद्यालंकार, डॉ. सत्यपाल, स्वामी ओमानन्द जी तथा अन्य असंख्य वीरों ने राष्ट्रीय यज्ञ में आहुति दी। चाहे असहयोग आन्दोलन हो, चाहे विदेशी वस्तुओं की होली जलाना तथा स्वदेशी का प्रचार हो, नमक आन्दोलन हो या 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन हो, आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की मानस संस्था आर्य समाज के रणबांकुरो ने अपने जीवन की आहुति दी। यूं तो आर्य समाज के असंख्य सदस्यों ने राष्ट्र यज्ञ में अपना-अपना योगदान दिया परन्तु देश की स्वाधीनता के प्रसंग में लिखते हुए भारत के प्रसिद्ध ओजस्वी वक्ता, अदम्य राष्ट्रप्रेमी कंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर को भूल जाना जीवित शहीदों के तप त्याग के साथ क्रूर मजाक ही कहा जायेगा। भारत के इस वीर पुत्र ने अपने ओजस्वी भाषणों से उत्तर भारत की जनता में राष्ट्र की बलिवेदी पर मर-मिटने की जो उत्कण्ठा तथा जोश जागृत कर दिया था, वह भारत के स्वतन्त्रता समर का एक अलभ्य किन्तु अमर अध्याय है।

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के देश प्रेम से पूर्ण भाषणों के ओजस्वी तथा व्यापक प्रभाव से भयभीत होकर अंग्रेज सरकार ने पंजाब के सीमा प्रान्त में आपका प्रवेश निषिद्ध कर दिया था। जब देशभक्त कंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जनता की मांग पर ब्रिटिश सरकार की आज्ञा भंग कर पंजाब पहुँचे तो आपको आदेश भंग के अपराध में पकड़ हथकड़ियों और बेड़ियों से बाँधकर अदालत में अंग्रेज न्यायधीश के सामने उपस्थित किया। उस अंग्रेज न्यायाधीश ने बहुत कुछ पूछने के पश्चात् यह पूछा ''तुम कहाँ के निवासी हो?'' उत्तर में यू. पी. प्रान्त का नाम सुनकर वह अंग्रेज बोला, ''तुम इतनी दूर से फ्रन्ट फील्ड में प्रचार करने क्यों आये हो? तुम्हें अपने प्रान्त के आस पास प्रचार करने के लिए कोई स्थान नहीं मिला'' यह सुनकर कुंवर जी ने न्यायाधीश से ही पूछा, ''साहब, आपकी जन्मभूमि कहाँ, ''साहब, आप सात हजार मील की दूरी से यहाँ अपना प्रभुत्व जमाने आ पहुंचे हो, क्या आपको शासन करने के लिए इंग्लैण्ड के आसपास कोई और देश नहीं मिला था? जब आप इतनी दूर से यहाँ राज्य करने आ सकते हैं, हम कुछ सौ मील की दूरी से अपने ही देश में हमारे प्रचार करने पर आपको दर्द क्यों होता है'' यह करारा उत्तर सुनकर क्रोध से भरकर उस अंग्रेज न्यायाधीश ने पुलिस को कहा, ''यह बहुत बदमाश तथा गुस्ताख है, इसको ले जाकर तुरन्त जेल में डाल दो।''

बन्धुओं! जिसके राज्य में सूर्य भी नहीं छिपता

था, ऐसी विदेशी सरकार के प्रतिनिधि अंग्रेज न्यायाधीश के समक्ष दिये गये उक्त निर्भीक उत्तर से आने वाली विपत्तियों के पहाड़ की आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं। इसी विशुद्ध तथा प्रबल देश प्रेम के कारण पुलिस के डंडे, लाठियों, कोडो की मार, जेलों के गले, सड़े भोजन, तंग, अन्धेरी तथा गन्दी कोठरियों के निवास तथा अन्य अनेक यातनाओं के कारण कुंवर जी का शरीर जीवन के अन्तिम भाग में हड्डियों का एक कंकालमात्र शेष रह गया था।

बन्धुओं! यह तो एक बानगी थी जो मैंने आपके सम्मुख प्रस्तुत की है। ऐसी न जाने कितनी और कैसी यातनायें आर्य समाज के अनगिनत वीरों ने झेली हैं उनका वर्णन करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के क्षेत्र में आर्य समाज ने जो महत्वपूर्ण भूमि निभाई है। उसका संक्षिप्त विवरण मैंने इस लेख में दिया है। भारत के राजनैतिक उत्थान एवं पुर्ननिर्माण में सर्वाधिक सहयोग देने के बावजूद भी आज के इतिहास के ग्रन्थों में तद् विषयक प्रकरण में आर्य समाज के कार्य अनुरूप महत्वपूर्ण श्रेय नहीं दिया जाता है, जो कि दिया जाना चाहिए। इसके निम्न कारण हो सकते हैं:-

1. आर्य समाज के इन राजैनतिक उत्थान के महत्वपूर्ण कार्यों से इतिहासकारों का अनभिज्ञ होना और आर्य समाज के इतिहासकारों द्वारा अपने इतिहास का प्रचार-प्रसारण न कर पाना।

2. आर्य समाज के सुधार कार्यों, सिद्धान्तों, मान्यताओं एवं गतिविधियों से वैमनस्य होने के कारण द्वेष भाव से जानबूझकर कर इन गौरव पूर्ण कार्यों का वर्णन न करना।

3. पद प्राप्ति, धन लोलुपता, लोकैषणा आदि स्वार्थों के कारण आर्यसमाज के इन महत्वपूर्ण कार्यो की उपेक्षा करना।

4. जनता और विशेषकर शासकों की दृष्टि में सर्वप्रिय बनने के अभिप्राय से आर्य समाज के महत्वपूर्ण पहलू से जानबूझ कर आंख मीचना।

देश का कोई निष्पक्ष इतिहासकार इतिहास के अनुसन्धान के प्रसंग में आर्य समाज के इन कार्यों से अपरिचित रह जाये, यह असम्भव है। यदि है तो उसे इतिहासकार कहना इस शब्द का घोर, अपमान करना है। उसकी लेखनी न्याय की तुला कहलात है, वह अपनी लेखनी से राष्ट्र के स्वर्णिम या धूमिल किन्तु यथार्थ भूतकालीन कार्यों के चित्रण से भविष्य का पथ प्रदर्शक होता है अन्यथा इतिहासकार और उपन्यासकार में कोई अन्तर नहीं रहेगा।

माननीय इतिहासकार बन्धुओं! अपने इस क्रांतिमय स्वरूप को पहचानो, सांसारिक प्रलोभनों से ऊपर उठो। आप लोगों ने आर्यों के गौरवशाली कार्यो का वर्णन न करके अपनी लेखनी नाम तथा कार्य को अवमूल्यन किया है। स्मरण रखना-**''कृतघ्नस्य नास्ति निष्कृति:''** कृतघनता का प्रायशित भी नहीं होता है। महात्मा विदुर ने कहा है:- संसार में सबसे बड़ा पाप और अपराध कृतघनता है।''

अत: हमारे राष्ट्र के इतिहासकारों। अभी भी समय है, जागो तथा अपने कर्तव्य को पहचानो। आर्य समाज के गौरवशाली कार्यों का उल्लेख कर अपनी भूलों का प्रायश्चित कर लो। आर्य समाज के साथ न्याय कर अपनी नैतिकता का परिचय दो। आशा करता हूँ कि इतिहासकार होने का दावा करने वाले निष्पक्ष सज्जन भविष्य में अपनी लेखनी की भूलों का परिमार्जन करने का नैतिक साहस दिखायेंगे।

(विशेष:- इस लेख के लिए मैंने आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री जी की पुस्तक ''स्वतन्त्र्य संग्राम में आर्य समाज का योगदान'' से बहुत कुछ प्राप्त किया है। लेखक एवं प्रकाशक का हार्दिक धन्यवाद!!)

4/45 शिवाजी नगर, गुरुग्राम
(हरियाणा), मो.09911197073

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें तथा अपने जीवन को प्रकाशित कर अन्य को प्रकाशित करने में सहयोग करें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

अद्वितीय सोच के धनी-नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

- आचार्य उमाशंकर शास्त्री

हमारी मातृभूमि रत्नगर्भा है। इस रत्नगर्भा भारत माँ के गर्भ से अनेकों राजा, महाराजा, योद्धा, शूरवीर, ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि, महर्षि, योगी, तपस्वी और न जाने कितने 'रत्न' पैदा हो चुके हैं। इन्हीं देदीप्यमान रत्नों में 'सुभाषचन्द्र बोस' अमूल्य रत्न थे। सुभाष बाबू, क्रांतिकारी थे, ज्ञानी थे, ध्यानी थे, राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले एक शाश्वत हस्ताक्षर थे। जिनके व्यक्तित्व, कृतृत्व का प्रभाव सदा अक्षुण रहेगा। जिस धरती पर सुभाष ने जन्म लिया उसी धरती पर एक महान व्यक्तित्व का स्वामी एक महान आदर्शवान सम्राट ने भी जन्म लिया था जिसका नाम था सम्राट अशोक। भारतवर्ष के इस महान सम्राट को युद्ध से वितृष्णा हो गई और वह धर्म के शरण में चला गया था। उसके कानों में प्रेरणामन्त्र गूंजने लगा।

बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि।
संधं शरणं गच्छामि॥

वह राजा बुद्ध की शरण में चला गया। धर्म की शरण में चला गया। संघ की शरण में चला गया। हमारे देश में एक और राजा का प्रादुर्भाव हुआ जो अपने मन का राजा था और जनता का वह हृदय सम्राट था नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जो स्वनिर्मित राज्य का अधिष्ठाता बना। इस राजा को धर्म से वितृष्णा हो गई और वह युद्ध की शरण में चला गया और इस राजा के कानों में प्रेरणा मन्त्र गूंजने लगा।

युद्धं शरणं गच्छामि, कम्मं शरणं गच्छामि, संधं शरणं गच्छामि॥

यह राजा युद्ध की शरण में चला गया। कर्म की शरण में चला गया और संघ (आजाद हिंद संघ) की शरण में चला गया। सम्राट अशोक ने युद्ध को छोड़ा और धर्म को अपनाया। युद्ध की विभीषिकाओं से उसका मन भर गया। इसने उस युद्ध से अपना सम्बन्ध नहीं रखा जिसका आधार था-रक्तपात, नरसंहार व हाहाकार। सुभाष ने धर्म को छोड़ा। युद्ध को अपनाया। धर्म का तत्कालीन विकृत रूप से उसका मन भर गया। जिसका आधार था प्रदर्शन, मिथ्याचार तथा आडंबरपूर्ण व्यवहार। सुभाष ने धर्म का बाह्य रूप से छोड़ दिया परन्तु उसकी मूल भावनाओं को नहीं छोड़ सका। धर्म को अपनाकर भी वह युद्ध करता रहा। सुभाष युद्ध करता था 'अज्ञान के अंधकार' से हिंसा की हिंसक प्रवृत्ति से और मन की दुर्बलता से। सुभाष का धर्म था त्याग, बलिदान, आत्मोत्थान, ईश्वरत्व की उपासना, मातृभूमि की मुक्ति और अथक जनजागरण।

अशोक ने दीक्षा ली थी उपगुप्त से और सुभाष ने दीक्षा ली थी-कर्मवीर चित्तरंजन दास से। अशोक तथा सुभाष की प्रेरणा भूमि एक ही रही। कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन किया और उसी का आधुनिक रूप उड़ीसा में सुभाष की पार्थिव देह और उसके संकल्पों का जन्म हुआ।

सुभाष का जन्म 23 जनवरी, 1897 को शनिवार के दिन के 12:15 अपराह्न् पर हुआ। सुभाष का जन्म मध्याह्न को हुआ और वह जीवन भर मध्याह्न की सूर्य की भांति चमकता रहा।

उड़ीसा के कटक में जिस समय सुभाष का जन्म हुआ। उस समय भारतवर्ष में हजारों बच्चों का जन्म हुआ होगा। पर वे सबके सब तो सुभाष जैसे संकल्पी, धुनी, लक्ष्यनिष्ठ, पराक्रमी और शौर्यवान नहीं हुए। यही स्थिति हमें सोचने को विवश करती है कि यद्यपि संसार में हजारों व्यक्ति एक ही समय में जन्म लेते हैं पर उसमें विरले ही ऐसे होते हैं जो जीवन के लिए कोई ध्येय लेकर आते हैं और इस ध्येय की पूर्ति के लिए उनकी हर सांस आती जाती है। सुभाष का अस्तित्व समुद्र के असंख्य बुलबुलों के 'बाड़व ज्वाला' के सम्मान था। उस समय भारत बड़े आंसुओं के सागर के समान था। जिसमें निराशा, हताशा, हीन भावना की धारा आकर मिल रही थी। सागर के धरातल पर भी कभी लपटें उठती हैं। सुभाष का जीवन आसुंओं के सागर में उठी हुई लपट के समान था। यह वह लपट थी जिसने अपने को प्रकाश दिया और अपने शत्रुओं को जलाया।

उस प्रचंड 'लपट' के बुझने की कथा जनरल हबीबुर्रहमान की अभिव्यक्ति के आधार पर चंद शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। सैगोन से 17 अगस्त, 1945 संध्या 5 बजकर 15 मिनट पर उड़ान भरा और टूरेन पहुँचा। रात्रि विश्राम टूरेन में ही हुआ। अगले दिन 18 अगस्त, 1945 को फिर विमान अपरान्ह् में तोइहक विमान स्थल पर रूका। विमान में पेट्रोल भराने तथा खाने-पीने के बाद पुनः विमान 2:35 मिनट पर उड़ा। 200 से 300 फीट ऊपर विमान उठा ही था कि भयंकर आवाज सुनाई पड़ी। नेताजी, जनरल हबीब तथा जनरल शीदी जो विमान के अंदर थे, सभी लोगों ने सोचा दुश्मन के लड़ाकू विमान ने उड़ते देख लिया है और ऊपर से झपट्टा मारा है। परन्तु बाद में समझ में आया कि पोटे इंजन का 'प्रोफेलर' टूट गया है। पोटे इंजन ने काम करना बन्द कर दिया है। केवल स्टार बोर्ड इंजन काम कर रहा था। हवाई जहाज ने डोलना प्रारम्भ कर दिया था। चालक उसका संतुलन संभालने का प्रयत्न कर रहा था। जनरल हबीब ने नेताजी

को देखा, वे बिल्कुल अविचल थे। कुछ ही क्षणों में विमान नाक की तरफ से जमीन में टकराया और थोड़ी देर के लिए आंखों के सामने अंधेरा छा गया। कुछ क्षणोपरान्त जब जनरल हबीब की चेतना लौटी तो उसने अनुभव किया कि सारा सामान उसके ऊपर लदा है और निकट में आग फैली है। नेताजी के सर में चोट लगी थी और वे खड़े हो चुके थे निकलने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु पीछे से निकलना सम्भव नहीं था। जनरल हबीब ने नेताजी को आगे से निकलने का निवेदन किया। नेताजी को स्थिति का अंदाजा हो गया था। उन्होंने विमान के अग्रभाग से निकलने का प्रयतन किया जो जमीन से टकराकर चूर हो गया था और जिससे लपटें उठ रही थी। नेताजी उन्हीं लपटों से बाहर निकल गये। नेताजी के खाकी सूती कपड़े पर पेट्रोल फैल गया था और कपड़ों में आग पकड़ ली थी। विमान के बाहर खड़े नेताजी अपने बुशकोट का बेल्ट खोलने का प्रयास कर रहे थे। जनरल हबीब नेताजी की ओर झपटा और पट्टा खोलने में उनकी मदद करने लगा जिससे उसके हाथ बुरी तरह जल गये। नेताजी का चेहरा बुरी तरह जल गया था तथा कट-पिट चुका था। नेताजी कुछ मिनट तक खड़े रहे फिर भूमि पर गिर पड़े। जनरल हबीब को नेताजी की स्थिति देखकर दिल बैठ सा गया और वे भी नेताजी के पास ही पड़ गये और बेहोश हो गये। विमान के दुर्घटना होने के 15 मिनट पश्चात् ही एम्बुलेंस से घायल नेताजी व जनरल हबीब को तोरहूक के सैनिक अस्पताल में पहुंचा दिया गया। नेताजी की बेहोशी नहीं टूटी थी परन्तु जनरल हबीब को होश आ गया था। वे नेताजी के बगल ही में थे। जनरल हबीब किसी तरह लड़खड़ाकर नेताजी के पास पहुंचा। जापानियों ने नेताजी को बचाने का भरसक प्रयास किया परन्तु सब व्यर्थ। अस्पताल में लाने जाने के छह घंटे पश्चात् 18 अगस्त, 1945 के 9 बजे रात्रि में नेताजी शांतिपूर्वक इस संसार से विदा हो गए। क्रांति की लपट बुझ गई। जनरल हबीब ने अपने वक्तव्य में बताया कि मूर्छा की हालत में कभी-कभी हसन का नाम पुकारा। मृत्यु के कुछ समय पूर्व उन्हें होश आया और उन्हें जब पूर्ण विश्वास हो गया कि वे बच नहीं सकेंगे तो हबीब से उन्होंने देशवासियों के नाम छोटा संदेश दे गये। उन्होंने हबीब से कहा-'हबीब! मेरा अंत बहुत निकट आ गया है। अपने देश की आजादी के लिए मैं जीवनभर लड़ता रहा हूँ। तुम जाकर देशवासियों से कहना कि वे भारत की आजादी के लिए लड़ाई जारी रखें। भारत आजाद होगा और बहुत शीघ्र ही, नेता जी के यही अंतिम शब्द थे।

जनरल हबीब ने बहुत प्रयास किया कि नेताजी के शव को सिंगापुर भेजने का प्रबन्ध किया जाये अथवा टोकियो भेजने का। सैनिक अस्पताल के कर्मचारियों ने बताया कि यह संभव नहीं है। नेताजी के जनाजे को जनरल हबीब की सम्मति से ही तोईहूक अस्पताल से सम्बद्ध जो पवित्र स्थान था वहाँ पूरे फौजी सम्मान के साथ नेताजी का दाह संस्कार किया गया। नेताजी का दाह संस्कार 20 अगस्त, 1945 को किया गया। जनरल हबीब के घाव भरने में लगभग तीन सप्ताह लग गये। तीन सप्ताह बाद एक एम्बुलेंस विमान टोकियो जाने वाला था। जनरल हबीब को उसमें स्थान मिल गया और नेताजी के भस्म के साथ सितम्बर को वे टोकियो पहुंच गए। नेता जी के पार्थिव शरीर का भस्म तीन दिनों तक श्री राममूर्ति के घर रखा गया जो आजाद हिंद संघ की जापान शाखा के अध्यक्ष थे। फिर 14 सितम्बर को नेताजी के भस्म का पात्र सूरीनाम क्षेत्र में रेंकोजी के बौद्ध मंदिर में रख दिया गया।

नेताजी का जीवन भी शानदार था और मृत्यु भी। जिस शान से नेताजी ने इस संसार के सामने अपने कृतृत्व को रखा वह निराला था। हमारे देश में हजारों क्रांतिकारियों ने जन्म लिया। देश के लिए अपना बलिदान दिया परन्तु नेताजी के सोच की दिशा अपने आप में अद्वितीय थी। एक अकेला व्यक्ति लाखों लोगों का संगठन कर देश की आजादी के लिए 'प्रबलतम' शत्रु को ललकारे और शत्रु के छाती पर अपना विजय पताका फहरा दे, यह केवल नेताजी ही कर सकते थे। नेताजी के जीवन के किसी भी 'फलक' को देखें तो हर फलक में तीक्षणता, तीव्रता तथा ज्योतिर्मय आभा दिखाई पड़ती है।

आज नेताजी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके जीवन की प्रचंडता और प्रखरता का सूक्ष्म प्रभाव आज भी भारतवासियों के हृदय पर अक्षुण है।

आज नेताजी जैसे व्यक्तित्व की परम आवश्यकता है। देश की आजादी का सपना देखने वाले उस महान सपूत के महान राष्ट्र की महानता पर ग्रहण लग गया है और घोटाला, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन की पराकाष्ठा रूपी राहु-केतु भारतमाता के जाज्वल्यमान दिव्य छवि को ग्रस रहा है। अन्त में...

अवसाद पूर्ण जीवन को हास चाहिए।
देश के गद्दारों की लाश चाहिए।
मुमूर्ष मानवता को सांस चाहिए और,
भारत को फिर से सुभाष चाहिए॥

-महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल, मंदिर, तेघड़ा,
बेगूसराय, बिहार-851133, मो. 9905416899

उत्तम आदर्श पुरुष योगीराज श्रीकृष्ण

–आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

श्रीकृष्ण के जन्म के समय की स्थिति

जब श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था, उस समय बड़ी ही विपरीत परिस्थिति थी। द्वापर के अन्त में भारत के भाग्याकाश पर अविद्या एवं अन्धकार की घनघोर घटाएं छाई हुई थीं। सामाजिक संगठन कमजोर हो चुका था। भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंट चुका था। समूचे देश में हजारों मनमाने स्वच्छन्द राजा भरे पड़े थे। अधिकतर राजा स्वेच्छाचारी और विलासी हो चुके थे। एक ओर हस्तिनापुर में कौरव-पांडवों का भयंकर कलह था। कंस के दरबार में यह अत्याचार था कि उसने पिता महाराज उग्रसेन को भी जेल में डालकर स्वयं राजा बन बैठा। नरकासुर जो असम का राजा था, उसने अपने रंगमहल में हजारों नवयुवतियां बंदी बनाकर रखी हुई थीं। मगध नरेश देश का सर्वेसर्वा बनना चाहता था, चौरासी राजा उसने अपने कैदखाने में डाल रक्खे थे। चेदि देश का राजा शिशुपाल भी उस समय महाशक्तिशाली समझा जाता था। उस समय राजाओं और राजघरानों का चरित्र बहुत ही गिर चुका था। वर्ण व्यवस्था बिगड़ चुकी थी। अनेक विद्या विशारद ब्राह्मण अर्थ के दास होकर राजकुलों की सेवा स्वीकार करने लगे थे। जैसा कि गुरु द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, महात्मा विदुर, दुर्योधन के दास बनकर जीवन यावन करने लगे थे। द्रौपदी के प्रति किये गये अत्याचार पर भी चुप रहे थे। उस समय की कई घटनाएं बता रही हैं कि उस समय धर्म का ह्रास और अधर्म की वृद्धि हो रही थी।

श्रीकृष्ण का जन्म एवं वंश–विपरीत परिस्थिति

श्रीकृष्ण यदुवंशी थे। इनके पिता का नाम वासुदेव और माता का नाम देवकी था। आज से लगभग 5000 वर्ष पहले हमारे चरित्रनायक ने बड़ी ही विकट परिस्थितियों में जन्म धारण किया। इस महापुरुष का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र में उत्तर भारत के शूरसेन देश की राजधानी मथुरा में हुआ था। प्रजा को कंस के अत्याचारों से बचाने का जो लोग उद्योग करते उनका अग्रणी वासुदेव नामक एक वीर न्यायप्रिय पुरुष रत्न था। इसलिए कंस उससे सदैव जलता रहता था और भयभीत भी रहता था। उग्रसेन के कनिष्ठ भ्राता देवल की कन्या अर्थात् कंस की चचेरी बहन देवकी थी जो वासुदेव को ब्याही थी। कंस वासुदेव तथा देवकी की तेजस्विता से आशंकित रहकर उनके नाश के प्रयत्न में सदा तत्पर रहता था। किसी ने उसे बहका दिया था कि देवकी के पुत्र के हाथ से तुम्हारा वध होगा। इसलिए कंस ने वासुदेव और देवकी के छः पुत्रों को जन्मते ही मार डाला। सातवें गर्भ के भावी नाश के भय से मध्य रात्रि में ही पात हो गया। श्री वासुदेव जी अपनी ज्येष्ठा गर्भवती भार्या रोहिणी को कंस के अत्याचार की आशंका से गोकुल निवासी अपने मित्र 'नन्द' नामक गोपाधिपति के घर पहुंचा आये थे। भाद्रपद कृष्णाष्टमी की अंधियारी आधी रात को घनघोर वृष्टि के समय देवकी के आठवें पुत्र का जन्म हुआ। उसी समय किसी प्रकार पहरेदारों से बचते-बचाते हुए उस बालक को रात-रात यमुना पार करके नन्द के यहां गोकुल में पहुंचा आये और उसी रात नन्द के यहां उसकी स्त्री यशोदा की कोख से तुरन्त जन्मी हुई कन्या को उसके बदले में उठा लाये। कंस ने उसको देवकी की कन्या समझकर मार डाला। इसके पहले ही नन्द के रहने वाली 'रोहिणी' के यहां भी पुत्र का जन्म हुआ था। इसका नाम 'बलराम' रखा गया।

गऊ पालन और गौरक्षा की उत्कृष्ट परम्परा

उस समय भारत में बड़े-बड़े वर्तमान थे, जिनमें लाखों गौवें चरकर, भव्य भारत को घृत और दुग्ध के प्रभाव से तृप्त करती रहती थीं। नन्द के पास भी असंख्य गौवें थीं। मथुरा के चारों ओर की वनस्थली ब्रज मंडल नाम से प्रसिद्ध थी। कृष्ण ने उसी वातावरण में रहकर मल्ल-कला (कुश्ती) का अभ्यास किया। शारीरिक विकास किया। गोदुग्ध और घृत को मुख्य आहार बनाया। बलराम और श्री कृष्ण ने संयम, नियम और व्यायाम से शरीर को बलवान बना लिया था।

यज्ञोपवीत संस्कार एवं गुरुकुल में शिक्षा

वैदिक धर्म में संस्कारों का बड़ा महत्व है। वस्तुतः

संस्कारों से ही मानव सच्चा मानव बनता है। वसुदेव जी बड़े विद्वान् थे। उन्होंने 'गर्गाचार्य' द्वारा वेदोक्त विधि से बलराम और श्रीकृष्ण दोनों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। दोनों भाइयों को गोकुल के पास ही सान्दीपनि आचार्य के गुरुकुल में विधिपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन कराया। यहीं पर रहकर अंगों सहित चारों वेद, धनुर्वेद, स्मृति, मीमांसा, न्यायशास्त्र के साथ राजनीति का भी अध्ययन किया।

श्रीकृष्ण जी द्वारा किये गये समाज-सेवा एवं लोककल्याण के अद्भुत कार्य

श्रीकृष्ण जी गुरुकुल में पढ़ते थे। वे ग्राम्य जीवन में भी भाग लेते रहते थे। उन्होंने अनेक बार गोकुल वासियों को भीषण आपत्तियों से बचाया था।

भीषण सांड से रक्षा : श्रीकृष्ण की उन्मत्त बैलों के युद्ध देखने की बड़ी रुचि थी। यदि कोई अत्यन्त उन्मत्त बैल बेकाबू होकर दर्शकों पर पलटता था तो श्रीकृष्ण ही उसको अपने बाहुबल से वश में लाते थे। एक बार एक सांड पागल हो गया। वह गांववालों के लिए यमराज बन गया। श्रीकृष्ण ने उसकी गर्दन पकड़कर, अपनी बलशाली भुजाओं में जकड़कर, गीले वस्त्र की भांति मरोड़ दिया। फिर उसका एक सींग उखाड़कर उस पर आघात किया। इस बैल का नाम 'अरिष्टि' था।

केशि नामक जंगली घोड़े से रक्षा : 'केशि' नामक एक लम्बे-लम्बे बालों वाला घोड़ा यमुना के जंगलों में फिरा करता था। किसी को अपने निकट नहीं आने देता था। आने-जाने वाले राहगीर उससे आतंकित रहते थे। गोकुलवासियों की प्रार्थना पर श्रीकृष्ण ने उसे मौत के घाट उतार दिया। इसी से उनको लोग 'केशि सूदन' कहने लगे थे।

गो संवर्धन पूजा की परिपाठी : एक समय ऐसा था कि भारतवर्ष में कंस के अत्याचार चरम सीमा पर थे। सभी ब्रजवासी कंस से डरते थे और वे हिरणाकश्यप असुर राज की भांति कंस की पूजा कर उसे भेंट रूप में कर देते थे। श्रीकृष्ण जी द्वारा लोगों को कर न देने की प्रेरणा दी गई तथा 'यज्ञ' द्वारा देश के धन-धान्य और गो-धन की समृद्धि तथा रक्षा करने की परिपाटी को बढ़ाया, उचित परामर्श दिया।

गोवर्धन पर्वत की गुफाओं और कन्दराओं में लोगों की रक्षा

श्रीकृष्ण जी ने कंस जैसे अन्यायी और दुराचारी राजा की पूजा-सम्मान करने से लोगों को रोका। कृष्णचन्द्र स्वयं अपने देश के नेता थे। ब्रजवासियों पर कंस का कोप स्वाभाविक था। कंस ने सैनिकों को ब्रज पर अत्याचार और दमन करने का आदेश दिया। उन्होंने अपनी नीतिमत्ता, कार्य कुशलता, धैर्य और सेवा भावना से इस घोर विपत्ति काल में लोगों की रक्षा की। गोवर्धन पर्वत की गुफाओं और कन्दराओं में लोगों के रहने की व्यवस्था कर कंस के सैनिकों का डटकर मुकाबला किया। न कि गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठा लिया था। यह बात अवैदिक तथा असम्भव है।

कंस और उसके दो पहलवानें चाणूर और मुष्टिक का वध किया

कंस के लिए खुल्लमखुल्ला कृष्ण पर हाथ डालना बड़ा मुश्किल कार्य था। प्रजा में विद्रोह होने का भी भय था। इसलिए छलपूर्वक मरवाने की योजना बनाई गई। एक धनुष यज्ञ का आयोजन मथुरा में रखा गया। उसमें अक्रूर को भेजा उन्हें लाने के लिए, श्रीकृष्ण तथा बलराम को उस आयोजन में आमंत्रित किया। जब श्रीकृष्ण जी कंस के दंगल में प्रविष्ट हुए तो इनके ऊपर एक मदमस्त हाथी छोड़ा गया। श्री कृष्णजी उसे मारकर आगे बढ़े। जरासंध की भांति कंस ने भी अपनी रक्षा के लिए कुछ पहलवान पाल रखे थे। मल्लविद्या विशारद पहलवानों को कंस ने पहले ही सिखा रखा था कि दंगल में ही कृष्ण और बलराम का काम तमाम कर दें। कृष्ण ने 'चाणूर' को और बलराम ने 'मुष्टिक' को मार गिराया।

कंस ने कड़ककर कृष्ण को पकड़ने की आज्ञा दी। कंस के इन शब्दों के निकलते ही कृष्ण ने कूदकर कंस के केश पकड़कर उसे भूमि पर दे पटका। कंस का भाई 'सुनामा' कृष्ण पर झपटा, परन्तु बलराम ने उसे भी यमलोक पहुंचा दिया।

कंस के स्थान पर राजसिंहासन पर नाना उग्रसेन को सम्मान

श्रीकृष्ण जी ने राजसिंहासन और मुकुट स्वयं न

संभालकर उन्होंने अपने बूढ़े और अत्याचार पीड़ित नाना उग्रसेन को राजसिंहासन सौंपकर उनका मान-सम्मान बढ़ाया। उन्होंने यदुवंश की खोई हुई स्वतन्त्रता और शक्ति पुन: प्राप्त की। इस विजय के बाद वे प्रजा के भक्त-वत्सल बन गये। उनकी जय-जयकार होने लगी। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि-

अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितम्
सुरक्षितं देवहतं विनश्यति।
जीवति अनाथोऽपि बने विसर्जित:
कृत प्रयत्नोऽपि गृहे विजश्यति।।

अर्थात् जिसकी (दैव रक्षितम्) दैव रक्षा करता है (आरक्षितम् सुरक्षितम् तिष्ठति) वह बिना रक्षा किये भी सुरक्षित रहता है। (दैव हतं विनश्यति) जिसके देव प्रतिकूल होता है वह अच्छी तरह रक्षा करने पर भी नष्ट हो जाता है। (वने विसर्जित: अनाथोऽपि जीवति) वने में छोड़ा हुआ अनाथ भी जीता रहता है। (प्रयत्नोऽपि कृत: गृहे विनश्यति) और प्रयत्न करने पर घर में सुरक्षित व्यक्ति नष्ट हो जाता है।

कंस ने कृष्ण के मारने के लिए नरपिशाचनी पूतना, अघासुर आदि अनेकों नरपिशाचों को भेजा, पर उन्होंने पराक्रमी श्री कृष्ण के बलवान् भुजदण्डों से मृत्यु के मुख में प्रवेश पाया।

महापराक्रमी महापुरुष अपने भावी उत्कर्ष का परिचय बाल्यावस्था से ही दिया करते हैं। प्रकाश कविरत्न का यह कथन सत्य ही है कि-

'बहादुर कब किसी का आसरा, अहसान लेते हैं,
उसी को कर गुजरते हैं जो दिल में ठान लेते हैं।
बहादुर मर्द का सब लोग लोहा मान लेते हैं,
जो है कमजोर उसका ही पकड़ सब कान लेते हैं।।

जरासंध और कालयवन से रक्षा

मगध (बिहार) का प्रतापी राजा जरासंध कंस का श्वसुर था। कृष्ण द्वारा कंस के वध पर उसकी दोनों बेटियां अस्ति और प्राप्ति रोती बिलखती अपने पिता के पास पहुँचीं। जरासंध ने अपनी विध वा पुत्रियों की शोचनीय अवस्था देखकर, एक विशाल सेना लेकर मथुरा पर आक्रमण किया। इस प्रकार जरासंध ने एक नहीं, दो नहीं बल्कि सत्रह बार आक्रमण किये। हर बार श्री कृष्ण के नेतृत्व में यादव सेना ने उसे मारकर भगा दिया। हर बार उसे मुँह की खानी पड़ी।

इस बार जरासंध ने अठारहवीं बार हमला किया। साथ ही एक म्लेच्छ राजा कालयवन ने भी मथुरा को घेर लिया। श्रीकृष्ण जी मथुरावासियों को दक्षिण गुजरात में द्वारिका में बिठाकर, उसका मुकाबला करने के लिए आये। उस समय कालयवन की सेना अरावली पर्वत के बीच में पड़ी थी। श्री कृष्ण ने उसे पर्वतों के घुम्मन-घेर में फंसाया कि कालयवन की सेना का नाम तक न बचा। कालयवन और जरासंध जैसे धूर्तों और शठों को इस प्रकार परास्त करना श्री कृष्ण की कूटनीति और रणनीति के ज्वलंत उदाहरण हैं। श्रीकृष्ण जी व्यर्थ की मारकाट और रक्तपात के विरोधी थे। उन्होंने द्वन्द्वयुद्ध द्वारा अकेले जरासंध को मारने का निश्चय किया। श्री कृष्ण जी एक दिन भीम और अर्जुन को साथ लेकर मगध की राजधानी उसके घर के फाटक तोड़कर अन्दर चले गये। भीम और जरासन्ध का चौदह दिन तक एक दूसरे पर लात, मुक्कों और घूसों का प्रहार चलता रहा। अन्त में चौदहवें दिन भीम के हाथों जरासंध मारा गया। कैद में पड़े **84** राजाओं को उसकी कैद से मुक्त किया और जरासंध के पुत्र सहदेव को राजसिंहासन पर बैठाया।

राजसूय यज्ञ की रक्षा और शिशुपाल का वध

जरासंध का वध हो गया। राजसूय यज्ञ की तैयारी होने लगी। इस अवसर पर बड़े सम्मान अर्घ्यदान के लिए श्रीकृष्ण जी को चुना गया। चेदि नरेश शिशुपाल जो कि श्रीकृष्ण का फुफेरा भाई था, यह सम्मान देखकर आगबबूला हो गया। उसने श्रीकृष्ण जी का विरोध किया और गालियां देने लगा। श्री कृष्ण ने नरेश मंडल को देखते-देखते सुदर्शन चक्र द्वारा उसका काम तमाम कर दिया। इसके अनन्तर महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ को विधि पूर्वक पूरा किया।

इस प्रकार योगीराज श्रीकृष्ण जी ने अनेकोंनेक कार्य किये। चुन-चुन करके दुष्टों का नाश किया, सज्जनों की रक्षा की।

ए-94, विकासनगर, फेस-3, हस्तसाल ऐरिया, नई दिल्ली-59

श्रावणी पर्व-रक्षाबन्धन-मानव सुरक्षा एवं श्रद्धा का पर्व

- आर्य रामकुमार दहिया, एच.डी.सी. बेरीगेट, झज्जर

भारत वर्ष त्यौहार व पर्वों का देश है। यहां दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक त्यौहार मनाये जाते हैं। भारत में जन्म भी एक पर्व है, और मृत्यु भी अर्थात् जन्म से मृत्यु पर्यन्त जीवन को सफलतापूर्वक चलाना और श्रद्धा से जीवन सम्बन्धी साधनों की रक्षा करना व सहयोग लेना या देना ही महापर्व है। भारतीय त्यौहारों में आर्य संस्कृति से जुड़ चार महापर्वों में श्रावणी-रक्षाबन्धन का प्रथम स्थान है। इसके पश्चात् पर्वों का क्रम आरम्भ हो जाता है। विजयदशमी का दूसरा स्थान है जो क्षत्रियों को उनके कर्तव्यों का बोध कराता है। देश की रक्षा करना ही इनका परम कर्तव्य है। इसी श्रृंखला में दीपावली का तीसरा स्थान है जो वैश्यों के उनके कर्त्तव्यों का बोध कराता है। यह पर्व अन्धेरे से प्रकाश की ओर जाने का संकेत-प्रेरणा देता है। बुराइयों को त्याग अच्छाइयों को ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। इसके बाद होली पर्व का चतुर्थ स्थान है यह पवित्र त्यौहार है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के आपसी मेल-जोल और सद्भावना का प्रतीक है प्रेमपूर्वक एक दूसरे की सहायता रक्षा व सहयोग करना ही इसका उद्देश्य है। श्रावणी पर्व चारों का मूल है अत: यह चारों पर्व यज्ञमय है।

त्यौहारों में श्रावणी पर्व रक्षा बन्धन का स्थान सबसे ऊँचा हैं इसी प्रकार जीवन में श्रद्धा एवं सुरक्षा का स्थान बहुत ऊंचा हैं यह त्यौहार श्रावण की पूर्णिमा को विद्या आरम्भ करने के रूप में मनाया जाता है। भीषण गर्मी से छुटकारा मिल जाता है तथा सुहावना समय आ जाता है। शान्त वातावरण व सुन्दर पर्यावरण बन जाता है। इसलिए वैदिक काल में यज्ञ-हवन करके वेदों का स्वाध्याय व पठन-पाठन श्रावणी से आरम्भ किया जाता था। आज भी गुरुकुलों में यही प्रथा प्रचलित है। ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत दी जाती है तथा कन्या गुरुकुलों में छात्राओं-ब्रह्मचारिणीयों को यज्ञोपवीत दी जाती हैं। यह पर्व ब्राह्मणों, विद्वानों, ऋषि मुनियों एवं आचार्यो को उनके कर्तव्यों का बोध कराता है। वेदरूपी सत्य ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का सन्देश देता है। वेदज्ञान ही सुख समृद्धि का मूल है। ब्राह्मण अपनी यजमानों को राखी बांधते हैं और सुखी रहने का आशीर्वाद देते हैं। हिन्दुओं में भाई-बहन से अपने हाथ पर राखी बंधवा कर उसे रक्षा का वचन देता है। बहन भाई के मस्तक पर सिन्दूर का तिलक करके मंगल कामनाएं प्रदान करती है यह भाई श्रद्धा से धन सम्पति से उसका मान करता है। यह सभी बातें मानव सुरक्षा का सूत्र हैं। कुछ लोगों का विचार है कि मुसलमानों के आक्रमण काल में स्त्रियों की रक्षा हेतु यह त्यौहार मनाया जाता है। यहां तक कि एक राजपूत महिला रानी कर्मादेवी से हुमायूँ ने इसे सम्मान सहित स्वीकार किया तथा रानी की रक्षा की। इतिहास ऐसा भी बताता है कि हिन्दू-मुस्लिम दोनों जातियां मेल-मिलाप से एक-दूसरे के त्यौहारों में भाग लेती थी। सेना और प्रशासन में दोनों जातियों के अधिकारी व कर्मचारी होते थे। साहित्य में मुस्लिम शायरों व हिन्दू कवियों लेखकों जैसे रहीम सैयद, अमीर अलीमीर, अमीर खुसरो, हरिऔध व रामनरेश त्रिपाठी आदि ने उर्दू व हिन्दी के मिले जुले शब्दों में रचना की। समाज को प्रेम और आपसी सहयोग का सन्देश दिया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की सहायता एवं सहयोग के बिना मानव जीवन का छोटे से छोटा कार्य भी सम्पन्न नहीं हो सकता। जैसे भोजन वस्त्र भवन निर्माण कार्य या शिक्षा। इसीलिए मनुष्य को जन्म लेने के समय ही समाज को अपनाना पड़ता है। इसमें हमारे समाज का निम्न वर्ग से उच्च वर्ग का सहयोग अपेक्षित एवं अनिवार्य है। साधारण अवस्था मे निम्न वर्ग की दाई होती है जो बच्चे का जन्म कराती है। असाधारण अवस्था में उच्च वर्ग लेडी डाक्टर की आवश्यकता पड़ती है। यह वर्गीकरण शिक्षा एवं ज्ञान के आधार पर ही है इससे प्रतीत ही नहीं अपितु स्वयं सिद्ध है कि छोटे-बड़े सभी वर्गो को सहयोग की आवश्यकता अनिवार्य है। सहयोग एवं श्रद्धा की भावना से ही समाज का जन्म हुआ है। समाज शब्द चार वर्णो से मिलकर बना है। जिसके भिन्न-भिन्न वर्ण इस प्रकार है।

स+म+आ+ज=समाज

इन चारों वर्णों से उत्पन्न समाज का अर्थ क्रमशः

नीचे दिया जाता है।

(1) सकार में 'स' का अर्थ है सब

(2) मकार में 'म' का अर्थ है मिलकर

(3) आकार से 'आ' का अर्थ है आनन्द से।

(4) जकार से 'ज' का अर्थ है जीवों और जीने दो।

उपरोक्त विवरण देखने से साफ प्रतीत होता है कि प्रत्येक वर्ण से उत्पन्न अर्थ कितना सुन्दर और आनन्दकर है। इन्हीं वर्णों से समाज का सत्यं-शिवं-सुन्दरं रूपी महावाक्य पूर्ण होता है। अतः समाज का पूर्ण अर्थ हुआ-सब मिलकर आनन्द से जीवो और जीने दो। परिवार हमारे समाज की एक इकाई है जो मानव से शुरु होती है। अर्थात् मानव ही इसका श्रीगणेश करता है। इसी का विकास घर, ग्राम, देश, राष्ट्र और सम्पूर्ण जगत् है। सारा विश्व ही एक घर एवं राष्ट्र है। जैसे परिवार में मुखिया का सभी छोटे-बड़े सदस्य मन, वचन, कर्म से श्रद्धा और सहयोग करते हैं वही परिवार पूर्ण विकसित और सुखी होता है। इसी प्रकार हमें अपने राष्ट्र के लिए मन-वचन-कर्म से सहयोग करने का संकल्प करना चाहिए। जिससे हमारा राष्ट्र उन्नत एवं सुखी हो।

हम आनन्द से कब जी सकते हैं और कब दूसरों को जीने दे सकते हैं? सरल सा उत्तर है जब हम श्रद्धा और सहयोग को जीवन में अपना लेंगे। अविद्या का त्याग कर देंगे, स्वार्थ को छोड़ देंगे और वेदों के ज्ञान को अपना लेंगे। इसी हेतु श्रावणी पर वेदों का स्वाध्याय, अध्ययन, अध्यापन-पठन-पाठन आरम्भ किया जाता है। क्योंकि वेद ज्ञान ही मनुष्य को असत्य से सत्य की ओर चलने का मार्ग दिखा सकता है। अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले जा सकता है। अथवा मृत्यु से अमरता की ओर ले जा सकता है। अर्थात् दुःख से सुख की ओर ले जा सकता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जीवन की सफलता एवं सुरक्षा का कोई मार्ग नहीं है। आज हमारा राष्ट्र दुःखी है। भारत माता दुःखी है चारों ओर अज्ञानता और भ्रष्टाचार के बादल छाये हुए हैं, क्रूर काल नाच रहा है। प्रतिदिन कितनी बहनों के भाई काल का ग्रास बनते जा रहे हैं।

कितनी युवतियों की मांग का सिन्दूर पूछा जा रहा है। कितनी माताओं की गोद सूनी हो रही है। कितने बच्चे दीनहीन अनाथ और बेसहारा हो रहे हैं। चारों तरफ हिंसा और आतंकवाद की काली छाया छाई हुई है। लोगों का एक दूसरे पर विश्वास नहीं है। यहां तक भय छाया हुआ है कि लोग अपनी छाया से भी डरते हैं।

अत्याचार, कदाचार, भ्रष्टाचार और बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही हैं, हिंसा का तांडव जारी है, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सब कसाई बन चुके हैं। हे जवानो विद्वानों भारतवासियों आज दुःखी भारत माता तुम्हें रक्षा के लिए पुकार रही है। है कोई मातृभक्त, देशभक्त, राष्ट्रभक्त निःस्वार्थी मानव सच्चा मानव, श्रेष्ठ मनुष्य आर्य ही मेरी पुकार सुनेगा, मैं आशा से जी रही हूं कोई अज्ञान और भ्रष्टाचार के बादल दूर करेगा। आज इस श्रद्धा और सुरक्षा के प्रतीक रक्षाबन्धन एवं श्रावणीपर्व पर हम आपसी प्रेम परस्पर एकता सभी मिलकर आनन्द से जीवो और जीने दो। के नारे को साकार करने का संकल्प करके अपने समाज और राष्ट्र को सुखी बनावें। यही हमारी भारत माता की पुकार है।

भाव से मनुष्य का यश

एक प्यासा गृहस्थी के घर आया। उसने उसे पानी पिला दिया। एक भूखा आया झट उसे रोटी खिला दी। वह उसका यश गाता हुआ चला गया। प्यास तो जल से बुझाई-भूख रोटी ने, गृहस्थी ने अपने शरीर के अन्दर से तो निकाल कर कुछ दिया नहीं, श्रेष्ठता किसकी हो-अन्न और जल की, परन्तु यश मनुष्य का क्यों? जल और अन्न तो प्रभु का था मनुष्य का यश इसलिए है-क्योंकि अन्न और जल अपने आप किसी की तृप्ति नहीं कर सकते, जब तक कि मनुष्य का भाव साथ न हो। यह जगत भावनामय है। मनुष्य का नाम भाव से होता है। जिस प्रकार का भाव होता है-उसी प्रकार का दान बन जाता है। उसी प्रकार का यश, नाम तथा फल प्राप्त होता है। मनुष्य की कोई वस्तु अपनी नहीं। सब प्रभु की देन है। केवल भाव से ही मनुष्य की जय है। प्रभु की कितनी अपार दयालुता है कि मनुष्य को कुछ भी करना और देना नहीं पड़ता, केवल थोड़ी-सी बात करनी पड़ती है-शेष सब काम प्रभु का अपना है।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

मानव सेवा प्रतिष्ठान हुमायूँपुर नई दिल्ली	5100/-
श्रीमती शालिनी जी धर्मपत्नी श्री विवेक जी पूरी ऑयल मील बहादुरगढ़	5100/-
श्री प्रदीप जी राठी बहादुरगढ़	2500/-
दी शिव ट्रबो ट्रक यूनियन बहादुरगढ़	2100/-
श्री अभिमन्यु जी दहिया पंजाबी बाग, दिल्ली	2100/-
श्री बलवान सैनी जगबीर सैनी सुपुत्र स्व. श्री ईश्वर सैनी, बहा.	2100/-
श्री रमीकंश जी आंहल्याण गढ़ी, सांपला	2100/-
श्री सिद्धान्त जी सुपुत्र श्री डॉ. राजवीर जी दलाल सैक्टर-6, बहा.	2000/-
श्री हरीश जी बजाज, बहादुरगढ़	1200/-
श्री राजपाल सिंह डबास एच.एल. सिटी सैक्टर-37, बहा.	1100/-
श्री रामदेवी बत्तरा जी आदर्श नगर, दिल्ली	1100/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
श्री सुधांशु जी सुपुत्र श्री अंगिरामुनि आर्य सोहल्धा झज्जर	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रामप्रताप जी आर्य नरवाना जींद, हरियाणा	1100/-
पं. विजेन्द्र जी सुपुत्र पं. भूपसिंह जी परनाला, बहादुरगढ़	1100/-
श्री सुरेन्द्र कुमार जी महरम नगर दिल्ली	1100/-
कुमारी मेघाली सुपुत्री श्री विजेन्द्र जी शर्मा, बराही रोड, बहा.	1000/-
श्रीमती रामदुलारी वंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
श्री नरेश हुड्डा व राजेश हुड्डा सुपुत्र पहलवान जयसिंह रोहतक	511/-
श्री ठाकुरदास पाल जी आर्य, नर्जुला नगर, तेलगांना	500/-
श्री अमरेन्द्र कुशवाह, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती विमला सिंघल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री शीलचन्द्र जी आर्य कसार बहादुरगढ़	500/-
श्री राजकरण जी आर्य प्रधान आर्यसमाज बादली, झज्जर हरियाणा	500/-
श्री राजेश राठी आर्य बहादुरगढ़	500/-
श्री मोहनलाल जी खत्री खत्री परिवार बहादुरगढ़	500/-
स्व. श्री जयदेव जी सन्दूजा जी धर्मपुरा बहादुरगढ़	500/-
श्री कर्ण सिंह जी बासवाना हिसार	500/-

गौशाला हेतु दान

श्री सुनील अहलावत रामनगर, बहादुरगढ़	500/-
स्व. श्री जयराम दास जी चावला बहादुरगढ़	1600/-
श्री रमन नरूला जी बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश जी वर्मा ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री लक्ष्य जी राणा, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्रीमती जयंती देवी पत्नी श्री मांगेराम जी दलाल टण्डाहेड़ी
1 बोरी छिलका 1 बोरी खल, 1 बोरी चुरी 10 किलो गुड़ 151 रूपये

श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कला दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कला दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री मा. बलजीत सिंह जी चिमनी	2 किलो वीटा घी
श्रीमती मीनाक्षी जी बहादुरगढ़	50 किलो आलु, 121 रूपये
चौ. सूबे सिंह जी प्रधान परनाला, बहादुरगढ	40 किलो सरसों का तेल

विशिष्ट भोजन एक समय का

श्री ओमवती जी अवकाश प्राप्त अध्यापिका दयानन्द नगर बहा.
श्री विशाल जी गुलिया, सैक्टर-9, बहादुरगढ़
श्री डॉ. एस.के. टण्डन रेलवे रोड, बहादुरगढ़

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष–41548503, चलभाष–9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 अगस्त 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

यज्ञ-योग-साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो! ॥ ओ३म् ॥ यज्ञ-योग साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 52वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव समारोह पर

ऋग्वेद बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग शिविर

(बुधवार दिनांक 26 सितम्बर से मंगलवार दिनांक 2 अक्टूबर 2018 तक)

सानिध्य- पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

योगनिर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा	:	आचार्य अखिलेश्वर जी (अध्यक्ष वैदिक योग आश्रम आनन्द धाम, हरिद्वार)
वेदपाठ	:	श्री ध्रुव शास्त्री जी, श्री रीतेश शास्त्री जी (आश्रम)
प्रमुख वक्ता	:	श्री स्वामी रामानन्द जी, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी (आश्रम फर्रूखनगर), आचार्य चांद सिंह जी (आश्रम), डॉ. मुमुक्षु जी आर्य (नोएडा), आर्य तपस्वी सुखेदव जी वर्मा (दिल्ली), आचार्य रवि शास्त्री जी (आश्रम), आचार्य खुशीराम जी (वेद प्र.आ.प्र.सभा. दिल्ली)
भजनोपदेशक	:	वान. हरीश मुनि जी, महात्मा विश्वमुनि जी, पं. रमेशचन्द्र जी आर्य झज्जर, संगीताचार्य लक्षमण प्रसाद जी, श्री रामानन्द जी आश्रम के ब्रह्मचारी एवम् कन्या गुरुकुल लोवाकलां की छात्राओं का कार्यक्रम प्रभावशाली रहेगा।

कार्यक्रम समय : प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक ध्यान, 6 बजे से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण

प्रातः 8.00 से 11 बजे तक : यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं 3 से 6 बजे यज्ञ-भजन-उपदेश,

आर्य महिला जागृति सम्मेलन	:	रविवार 30 सितम्बर सायं 3 बजे से
योग सम्मेलन	:	सोमवार 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे से
चरित्र निर्माण सम्मेलन	:	सोमवार 1 अक्टूबर सायं 3 बजे से

पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

मंगलवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2018 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे तत्पश्चात् स्थापना समारोह

आर्यसमाजों के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक इस शुभ अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। भारतीय वेशभूषा में यजमान आसनों को सुशोभित करने के लिए शीघ्र अपना नाम यजमान सूची में लिखवायें। बाहर से आने वाले माताओं/बन्धुओं/साधकों/याज्ञिकों के लिए भोजन एवं निवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। आप अपने पधारने की सूचना 15 सितम्बर से पूर्व शीघ्र प्रेषित करें, जिससे आपके निवास की व्यवस्था उत्तम की जा सके। ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लावें। अधिक से अधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर इस विशाल आयोजन से लाभ उठावें। आश्रम बस स्टाप के समीप दिल्ली रोड़ पर स्थित है।

(निवेदक)

राजवीर आर्य, संयोजक, चलभाष: 9811778655

विक्रम देव शास्त्री, व्यवस्थापक आश्रम चलभाष: 9896578062

सत्यानन्द आर्य	कन्हैयालाल आर्य	दर्शनकुमार अग्निहोत्री	सत्यपाल वत्स
प्रधान (ट्रस्ट)	उपप्रधान	मन्त्री	उपमन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-124507, जिला झज्जर, हरियाणा

चलभाष : 09416054195

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

अगस्त 2018

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

रविवार 15 जुलाई 2018 को दैनिक जागरण के मुख्य पृष्ठ पर छपा समाचार

किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार...

जीना इसी का नाम है

82 वर्षीय स्वामी धर्ममुनी महाराज के बहादुरगढ़ स्थित छोटे से आश्रम में सात राज्यों के बच्चे पाए हुए हैं आसरा

1975 में महाराज ने संन्यास लिया और आश्रम की शुरुआत की

प्रदीप भारद्वाज • बहादुरगढ़

संन्यासी चोला। बाल ब्रह्मचारी। घर-परिवार से विरक्त मगर भरा-पूरा परिवार। इनके इस परिवार में एक-दो नहीं, बल्कि 50 से ज्यादा अनाथ और गरीबी में जन्मी जिंदगियां हैं, जिन्हें इस संन्यासी के आश्रम में नवजीवन मिल रहा है।

82 वर्षीय स्वामी धर्ममुनी महाराज के बहादुरगढ़ स्थित छोटे से आश्रम में सात राज्यों के बच्चे आसरा पाए हुए हैं। ये बच्चे शिक्षा और संस्कार दोनों ही प्राप्त कर रहे हैं। महाराज ने 1975 में संन्यास लिया और आश्रम की शुरुआत की। कुछ साल पहले पूर्वोत्तर से कुछ बच्चों को एक संस्था के द्वारा यहां लाया गया। वहां पर ये बच्चे जबरन धर्म परिवर्तन के कगार पर थे। जो संस्था बच्चों को लेकर आई, उसने इनके पालन-पोषण में मदद करते हुए संन्यासी से इन्हें आश्रय मुहैया कराने की प्रार्थना की। धर्ममुनी ने इन्हें आश्रम में जगह दे दिया, लेकिन मदद का वादा करने वाले दूर होते चले गए। इसके बाद तो धर्ममुनि ने इन बच्चों की जिंदगी संवारने को ही जीवन का ध्येय बना लिया।

बच्चों के साथ स्वामी धर्ममुनि महाराज।